अप्रैल, 2026 , वर्ष : 47 अंक : 4

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

# तिब्बत देश

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

अप्रैल, 2026 , वर्ष : 47 अंक : 4

# तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित
तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचारों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग मुख्य भाषण देते हुए

समाचार - समाचार -

Contents

०१. परम पावन दलाई लामा ने धसा धोतोए कल्याण समिति और लोड्रिक कल्याण एसोसिएशन के दीर्घायु प्रार्थना समारोह में भाग लिया 2
०२. ११वें पंचेन लामा का ३७वां जन्मदिन समारोह 3
०३. सिक्योंग ने तिब्बत संग्रहालय की 'सीमांत कूटनीति' पर अस्थायी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, सर बेसिल गोल्ड की पोती भी शामिल हुईं 4
०४. कालोन थारलम डोल्मा चांगरा ने दिल्ली में नए केवीएस कमिश्नर विकास गुप्ता से शिष्टाचार भेंट की 6
०५. एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक ने परम पावन दलाई लामा के इस कथन का समर्थन किया कि दलाई लामा संस्था जारी रहेगी 6
०६. ४३वें शाक्य त्रिजिन, क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे ने ऑस्ट्रेलिया के संघीय वित्त मंत्री से मुलाकात की, 'शांति मंदिर' का उद्घाटन किया 7
०७. सुरक्षा विभाग ने तिब्बती मुद्दे पर तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का सम्मान करने के लिए पहला 'तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन' आयोजित किया 8
०८. उत्तरी अमेरिका के पहले तिब्बती सप्ताहांत स्कूलों ने 'करुणा वर्ष' के उपलक्ष्य में कला और साहित्य प्रतियोगिता का आयोजन किया 9
०९. परम पावन दलाई लामा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 'करुणा वर्ष' के तहत सरकारी प्राथमिक विद्यालय, जोगिवारा में स्टेशनरी और स्पोर्ट्स किट वितरित 10
१०. लद्दाख सोनमलिंग तिब्बती बस्ती में कृषि दिवस मनाया गया 10
११. भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने नई दिल्ली में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की १३५वीं जयंती समारोह में भाग लिया 11
१२. महिला सशक्तीकरण डेस्क ने तिब्बती बस्तियों में एसजीबीवी और लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्यशालाएं आयोजित कीं 11
१३. टिपा ने अरुणाचल के मेनचुखा से १२ छात्रों को ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पहल के तहत दाखिला दिया 12
१४. यूएन विशेषज्ञों ने चीन के नस्लीय एकीकरण और प्रोग्रेस कानून पर चिंता जताई 12
१५. चीन ने परम पवित्र धारग्ये का जबरन गायब कर सजा दी 13
१६. चीन का नया नस्लीय कानून जबरन एकीकरण को कानूनी बनाता है, पर संविधान का उल्लंघन करता है 14

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

**अपनी बात**

# ग्यारहवें पंचेन लामा को शीघ्र रिहा करे विस्तारवादी चीन

**प्रो0 श्यामनाथ मिश्र**
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

तिब्बती समुदाय में लगातार लोकतांत्रिक मूल्य मजबूत होते जा रहे हैं जबकि साम्यवादी चीन सरकार की तिब्बत में जारी लोकतंत्र विरोधी नीति ने मानवाधिकारों को समाप्त कर दिया है। इन दोनों परस्परविरोधी विचारों के ठोस उदाहरण इसी अप्रैल, 2026 में देखने को मिले। पहले बात तिब्बत में लागू दमनकारी चीनी नीति की। गत 25 अप्रैल को तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों द्वारा विष्व के विभिन्न देषों में ग्यारहवें पंचेन लामा गेदुन चूकी न्यीमा का सैंतीसवाँ जन्मदिन मनाया गया। वर्ष 1989 में 25 अप्रैल को जन्मे पंचेन लामा तिब्बती आध्यात्मिक परंपरा के पूजनीय धर्मगुरु हैं। अवतार की परंपरा में गेदुन चूकी न्यीमा के पहले दस पंचेन लामा हो चुके हैं। वर्तमान ग्यारहवें पंचेन लामा और विस्तारवादी चीन सरकार की क्रूरतापूर्ण तिब्बत नीति में बहुत खतरनाक संबंध है। इससे संपूर्ण विष्व समुदाय चिंतित है।

महान् तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा ने तिब्बती बौद्ध परंपरानुसार ग्यारहवें पंचेन लामा की खोज पर अपनी अंतिम सहमति दी थी। इस परंपरानुसार बौद्ध विद्वान एवं धर्मगुरु विषेष धार्मिक प्रक्रिया का पालन करते हुए नये पंचेन लामा की तलाष करते हैं। ऐसा दिवंगत पंचेन लामा द्वारा बताये गये संकेतों के आधार पर किया जाता है। इसी विषेष प्रक्रिया द्वारा ढूँढ़े गये गेदुन चूकी न्यीमा को वर्तमान चौदहवें दलाई लामा ने ग्यारहवाँ पंचेन लामा घोषित किया। इससे 14 मई, 1995 को संपूर्ण तिब्बती समुदाय में खुषी की लहर छा गई। लेकिन? घोषणा के तीन दिन बाद ही 17 मई को धर्मविरोधी चीन सरकार ने ग्यारहवें पंचेन लामा का अपहरण कर लिया। पंचेन लामा के साथ ही वह उनके परिजनों तथा गुरुजी को भी ले गई। इस दुखद घटना के कई साल बाद भी चीन सरकार पंचेन लामा, उनके परिजनों तथा गुरु की रिहाई नहीं कर रही है। चीन सरकार उनके बारे में किसी प्रकार की जानकारी भी नहीं दे रही है। इसीलिये यह अवैध गिरफ्तारी से अधिक निंदनीय अपहरण का मामला है।

निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित सरकार है, ने पंचेन लामा के सैंतीसवें जन्मदिन के अवसर पर कर्णाटक के बायलाकुप्पा में मुख्य समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में तिब्बत के राज्याध्यक्ष–षासनाध्यक्ष अर्थात् सिक्योंग माननीय पेंपा त्सेरिंग, तिब्बती संसद के सभापति और तिब्बती न्यायपालिका के प्रधान उच्च न्याय आयुक्त शाामिल थे। इस तरह लोकतंत्र के तीनों स्तम्भों के प्रधानों ने समारोह में शामिल होकर तिब्बती समुदाय में लोकतांत्रिक आदर्षों की मजबूती का मजबूत प्रमाण दिया।

विष्व के कई देषों में तिब्बती लोगों एवं तिब्बत समर्थकों ने पंचेन लामा के जन्मदिन पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये। प्रार्थना सभा, शांतिपूर्ण प्रदर्षन, साहित्य वितरण, धरना, मांग पत्र–समर्पण आदि कार्यक्रमों के माध्यम से पंचेन लामा की उनके गुरु एवं परिजन सहित शीघ्र रिहाई की मांग की गई। चीन सरकार से मांग की गई कि वह इनके बारे में संपूर्ण एवं प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराये। इस संदर्भ में चीन सरकार की तीव्र आलोचना करते हुए विष्व समुदाय से चीन पर व्यवस्थित और निर्णायक दबाव बनाने की अपील की गई। पंचेन लामा के तिब्बत स्थित परंपरागत ताषीलुंपो मठ की पवित्रता और आध्यात्मिक विषेषता के संरक्षण–संवर्धन हेतु भी आयोजकों द्वारा चीन से आग्रह किया गया।

अब चर्चा तिब्बती समुदाय में जनतांत्रिक आदर्षों के बढ़ते प्रभाव की। इसी अप्रैल माह में तिब्बती समाज निर्वासित तिब्बत सरकार के नये निर्वाचन की प्रक्रिया से गुजरा है। यह दलाई लामा की महत्वपूर्ण देन है। वे धर्मगुरु के साथ तिब्बत के राज्याध्यक्ष–षासनाध्यक्ष भी थे। हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार में भी उनकी वही स्थिति थी। उन्होंने स्वेच्छा से इसे स्वयं बदलने का कार्य किया। उनकी प्रेरणा से वर्ष 2001 से तिब्बती समुदाय ने मताधिकार द्वारा सरकार का निर्वाचन शुरू किया। आगे चलकर वर्ष 2011 में दलाई लामा ने अपने सभी राजनैतिक अधिकार जनता द्वारा निर्वाचित तिब्बत सरकार को सौंप दिये। उन्होंने अपने आप को केवल धार्मिक कार्यों तक सीमित कर लिया। यह उनके त्याग का अनूठा उदाहरण है।

दलाई लामा द्वारा प्रारम्भ की गई लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अनुरूप ही वर्ष 2026 में नई निर्वासित तिब्बत सरकार के गठन के लिये चुनाव कराये गये हैं। चुनाव दो चरणों में हुए हैं। फरवरी में संपन्न प्रथम चरण में साठ प्रतिषत से अधिक मत प्राप्त करने वाले माननीय पेंपा त्सेरिंग पुनः सिक्योंग निर्वाचित हो चुके हैं। तिब्बती निर्वाचन आयोग ने प्राथमिक चरण के बाद 26 अप्रैल को अंतिम चरण के चुनाव कराये। इसमें निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य निर्वाचित हुए हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि वयस्क तिब्बतियों ने मताधिकार का प्रयोग कर जनतांत्रिक तरीके से अपनी तिब्बत सरकार का गठन किया है। निर्वासन में रह रहे तिब्बती जहाँ लोकतंत्र को लगातार मजबूत करने में लगे हैं वहीं साम्यवादी चीन सरकार लगातार लोकतांत्रिक मूल्यों को कुचलने में लगी है।

चीन सरकार को चाहिये कि अपनी खराब अन्तरराष्ट्रीय छवि को सुधारने के लिये तिब्बत में मानवाधिकारों का पालन करे। इसका प्रारंभ वह ग्यारहवें पंचेन लामा से संबंधित प्रामाणिक जानकारी प्रकाषित–प्रचारित–प्रसारित कर तथा परिजनों एवं गुरु सहित उनकी रिहाई के साथ कर सकती है। चीन की साम्यवादी सरकार धर्म के प्रति नकारात्मक विचार रखती है। उसे तिब्बत के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं है। तिब्बत के प्रमुख धर्मगुरुओं के चयन का अधिकार सिर्फ तिब्बती धर्मगुरुओं और विद्वानों को ही है।

## ◆ ०१. परम पावन दलाई लामा ने धसा धोतोए कल्याण समिति और लोड्रिक कल्याण एसोसिएशन के दीर्घायु प्रार्थना समारोह में भाग लिया

२२ अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। धर्मशाला स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर सुगलाखंग में आज २२ अप्रैल को धसा धोतोए (खाम) कल्याण समिति और लोड्रिक (मुस्तांग परिवार समूह) कल्याण एसोसिएशन की ओर से परम पावन दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थनाएं की गईं। इन निकायों के प्रतिनिधियों ने परम पावन का उनके आवास के द्वार पर स्वागत किया और फिर उन्हें मंदिर तक ले गए। वहां पर गायकों ने अपने गायन और नर्तकों ने 'ताशी शोलपा' नृत्य प्रस्तुत कर उनका स्वागत किया। परम पावन मुस्कुराए और लगभग ५००० लोगों की विशाल जनसमूह की ओर हाथ हिलाकर अभिवादन किया। मंदिर के भीतर उन्होंने अपना आसन ग्रहण किया।

इस अवसर पर दीर्घायु अनुष्ठान 'इच्छा-पूर्ति चक्र की श्वेत तारा (व्हाइट तारा ऑफ द विश-फुलफीलिंग व्हील)' की साधना पर केंद्रित था। मूल रूप से इसके रचनाकार पांचवें दलाई लामा थे। नामग्याल मठ के महंत खेनसुर लोबसांग समतेन ने इस अनुष्ठान की अगुआई की। उन्होंने परम पावन को साष्टांग दंडवत के साथ एक रेशमी दुपट्टा (खतक) अर्पित करके अनुष्ठान की शुरुआत की। उनकी दाईं ओर गंडेन जांगत्से मठ के पूर्व महंत केउत्सांग रिनपोछे और नामग्याल मठ के लोबपोन (आचार्य) विराजमान थे, जबकि उनकी बाईं ओर जोंगखा चोडे मठ के वर्तमान और पूर्व महंत बैठे थे। उनके पीछे बोदोंग पंचन रिनपोछे विराजमान थे।

अनुष्ठान की शुरुआत कई प्रकार की भेंटों के अर्पण के साथ हुई, जिसके बाद आर्य तारा की स्तुति की गई:

हे माता 'तारे', आप प्राणियों को संसार (जन्म-मरण के चक्र) से मुक्त करती हैं।

'तुत्तारे' के माध्यम से, आप प्राणियों को आठ प्रकार के भयों से मुक्त करती हैं।

'तारे' के माध्यम से, आप प्राणियों को मृत्यु से मुक्त करती हैं।

हे तारा, हम आपको साष्टांग प्रणाम करते हैं...

आप परम सिद्धियां प्रदान करने वाली देवी हैं।

इसके बाद लामा के हृदय में कल्पित मंत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया गया:

लामा के हृदय को तारा के रूप में देखा जाता है। उसमें एक श्वेत चक्र स्थित है, जिसका स्वरूप चंद्रमा जैसा है। इस चक्र में आठ आरे और पांच घेरे हैं। इसके केंद्र में श्वेत बीज-मंत्र 'तम' स्थित है। इस 'तम' के चारों ओर परम पावन का विस्तृत नाम-मंत्र अंकित है : ओम अह गुरु वज्रधारा भट्टारक मंजूश्री वागिन्द्र सुमति ज्ञान शासन धारा समुद्र श्री भद्र सिद्धि और पुण्य ज्ञान पुष्तिम कुरु। इसके अतिरिक्त, चक्र के विभिन्न घेरों पर कई अन्य मंत्र भी अंकित बताए गए हैं।

इसके पश्चात् आध्यात्मिक परंपरा के लामाओं का आह्वान किया गया और उनसे वर्तमान लामा को अमरत्व प्रदान करने का अनुरोध किया गया। उन सभी लामाओं के नाम लेकर आह्वान करने के बाद, प्रत्येक से इस प्रकार प्रार्थना की गई:

'हम आपको इस पवित्र स्थान पर पधारने हेतु आमंत्रित करते हैं।

इस परम पावन धाम में पधारकर,

कृपया हमारे

यशस्वी एवं पवित्र लामा के जीवन को सौ कल्पों तक दीर्घायु प्रदान करें।

कृपया उन्हें अमर जीवन की आध्यात्मिक सिद्धि प्रदान करें।'

इस अनुष्ठान के मुख्य लामा और नामग्याल मठ के महंत ने 'दीर्घायु-तीर' को लहराया और फिर सिंहासन की ओर बढ़कर उसे परम पावन को समर्पित किया। परम पावन ने उस तीर को अत्यंत कोमलतापूर्वक विभिन्न दिशाओं में घुमाया।

अनुष्ठान आगे बढ़ा- "लामा के मस्तक को सुशोभित करने वाले अमिताभ बुद्ध का ध्यान किया जाता है, जिनका नाम कालांतर में रूपांतरित होकर 'अमितायुस' हो गया है। अमितायुस असीम दीर्घायु और आदिम प्रज्ञा के रक्षक हैं। उनका शरीर श्वेत वर्ण का है, जिसमें लालिमा की हल्की झलक है। उनका एक मुख और दो भुजाएं हैं। उनके दोनों हाथ 'ध्यान-मुद्रा' में स्थित हैं और उन्होंने अपने हाथों में एक स्वर्ण-कलश धारण किया हुआ है, जो 'अमरत्व के अमृत' से लबालब भरा है। यह अमृत कलश से छलककर बाहर आता है और लामा के मस्तक के शीर्ष-भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित छिद्र के माध्यम से उनके शरीर में प्रवेश कर जाता है। उनका संपूर्ण शरीर इस अमृत से परिपूर्ण हो जाता है, जिससे वे समस्त रोगों, नकारात्मक प्रभावों, हानिकारक कर्मों, अज्ञानजनित आवरणों और हमारी अशुद्ध दृष्टि को प्रतीत होने वाली अकाल मृत्यु के समस्त खतरों से पूर्णतः मुक्त होकर शुद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार, लामा 'अमरत्व' की आध्यात्मिक सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं।"

फिर उनके रोमछिद्रों से प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो उसके शरीर को एक हाथ की दूरी तक श्वेत रश्मियों के विशाल आवरण में घेर लेती हैं। इस तरह सभी शांतिपूर्ण ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं। उनके शरीर के रोमछिद्रों से पीली प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो पहले बने सफेद आवरण से आगे एक हाथ की दूरी तक पीले प्रकाश का आवरण बना लेती हैं। इसके द्वारा सभी बढ़ती हुई ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं। इसके बाद उनके शरीर के रोमछिद्रों से लाल वर्ण की प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो पीले आवरण से आगे एक हाथ की दूरी तक लाल प्रकाश का एक आवरण बना लेती हैं। इसके साथ ही सभी शक्तिशाली ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं।

इसके उपरांत उनके शरीर के रोमछिद्रों से गहरे नीले रंग की प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो लाल आवरण से भी आगे एक हाथ की दूरी तक गहरे नीले प्रकाश का एक आवरण बना लेती हैं। इससे सभी क्रोधपूर्ण ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं। फिर, उनके शरीर के रोमछिद्रों से हरे रंग की प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो गहरे नीले आवरण से आगे एक हाथ की दूरी तक हरे प्रकाश का आवरण बना लेती हैं। इससे सभी ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं। तदनन्तर, उनके शरीर के रोमछिद्रों से भूरे रंग की प्रकाश रश्मियां निकलती हैं, जो हरे आवरण से आगे एक हाथ की दूरी तक भूरे प्रकाश का आवरण बनाती हैं। इसके माध्यम से सभी आशीर्वाद और ज्ञानवर्धक गतिविधियां संपन्न हो जाती हैं।

'प्रकाश रश्मियों के ये छह आवरण एक ठोस और दृढ़, अंडे के आकार की

संरचना बनाते हैं, जिसे युगकल्प के अंत में चलने वाली प्रलयंकारी हवा भी नष्ट नहीं कर सकती। इनके बीच का स्थान नए खिले हुए और ताजे नीले उत्पल कमल के फूलों से भरा है, जो लचीले, घूर्ममान और क्षणभंगुर हैं।'

सफेद आवरण के भीतर एक सफेद चक्र दिखाई देता है। चक्र दक्षिणावर्त घूमता है। अग्नि का एक गोला प्रज्वलित होता है और लोहार की भट्टी पर गिरे पंख की तरह नकारात्मक शक्तियों और बाधाओं को तुरंत भस्म कर देता है।

एक धागा अनुष्ठान का नेतृत्व कर रहे लामाओं को वितरित किया गया, जिसका एक सिरा परम पावन के हाथ में था। इससे उनके बीच एक कड़ी जुड़ गई। उन्होंने श्वेत तारा के मंत्र का कई बार जाप किया। फिर धागा वापस ले लिया गया।

एक मंडल प्रार्थना के रूप में अर्पित किया गया, जिसमें परम पावन से अनुरोध किया गया कि वे सभी सचेतन प्राणियों और बुद्ध-वचनों के कल्याण के लिए लंबे समय तक जीवित रहें। इसके बाद पीठासीन लामा ने ज्ञानोदय के शरीर के प्रतीक श्वेत तारा, ज्ञानोदय की वाणी के प्रतीक एक धर्मग्रंथ और ज्ञानोदय के मन के प्रतीक एक स्तूप अर्पित किया।

इसके बाद कई वस्तुएं अर्पित की गईं, जिनमें दीर्घायु का अमृत कलश, पांच बुद्ध परिवारों के प्रतीक, दीर्घायु प्रदान करने वाली मदिरा, दीर्घायु की गोलियां और सात शाही प्रतीक शामिल थीं। इन सात प्रतीकों में बहुमूल्य चक्र, बहुमूल्य रत्न, बहुमूल्य रानी, बहुमूल्य मंत्री, बहुमूल्य हाथी, बहुमूल्य श्रेष्ठ अश्व और बहुमूल्य सेनापति होते हैं। ये सातों बहुमूल्य शाही प्रतीक महायान धर्म की संप्रभुता से संपन्न हैं, जिनकी स्तुति तीनों कालों के सभी विजेताओं (बुद्धों) द्वारा की गई है। इन्हें इस कामना के साथ अर्पित किया गया कि धर्म की संप्रभुता सदैव सुदृढ़ बनी रहे।

इसके बाद आठ शुभ प्रतीक-चिह्न अर्पित किए गए। इनमें चक्र, विजय-पताका, छत्र, अनंत बंधन, कमल का फूल, श्रेष्ठ कलश, सुनहरी मछलियां और दक्षिणावर्त शंख थे। इनके पश्चात आठ शुभ पदार्थ अर्पित किए गए। इनमें दर्पण, विष-नाशक औषधि, दही, दूब, बेल फल, दक्षिणावर्त शंख, सिंदूर और सरसों के बीज थे।

इसी बीच, प्रतिमाएं, धर्मग्रंथ, वस्त्र और अन्य भेंट लिए हुए श्रद्धालुओं का एक जुलूस परम पावन के पट्ट के समक्ष से तेजी से गुजरा। इसके बाद विभिन्न प्रायोजक समूहों के प्रतिनिधि परम पावन का आशीर्वाद ग्रहण करने हेतु सिंहासन के समीप पहुंचे।

इसके बाद, जमयांग ख्येनत्से चोकी लोद्रो द्वारा रचित प्रार्थना- 'अमरता के अमृत की धुन: परम पावन चौदहवें दलाई लामा (श्रेष्ठ विजेता और सर्वज्ञ) की दीर्घायु हेतु प्रार्थना' का सस्वर पाठ किया गया, जिसके उपरांत परम पावन की दीर्घायु हेतु एक-श्लोकीय प्रार्थना का पाठ किया गया।

परम पावन द्वारा दीर्घायु रहने का प्रस्ताव स्वीकार करने के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु उन्हें एक धन्यवाद मंडल अर्पित किया गया। तत्पश्चात, उपस्थित जनसमूह ने परम पावन द्वारा ही रचित प्रार्थना- 'ऋषि का सामंजस्यपूर्ण सत्य-गीत: बुद्ध की संप्रदायों से परे शिक्षाओं के उत्कर्ष हेतु प्रार्थना' का सस्वर पाठ किया, जिसका सारांश इस प्रकार है:-

साधनाा की यह एक सर्वोच्च और महान परंपरा है,

जिसमें बिना किसी त्रुटि के, विभिन्न चरणों के सार और क्रमिक चरणों का पालन किया जाता है,

जिसमें त्रिपिटकों तथा तंत्र के चारों वर्गों को समाहित किया गया है,

हिम-भूमि (तिब्बत) में बुद्ध की ये शिक्षाएं चिरकाल तक फलती-फूलती रहें!

प्रार्थना का समापन इन शब्दों के साथ हुआ:

संक्षेप में कहें तो, जब तक धरती- आकाश रहेगा,

जब तक प्राणियों के बीच दुख विद्यमान रहेगा,

तब तक मैं भी यहां बना रहूं, ताकि उन्हें लाभ और सुख पहुंचा सकूं,

प्रत्यक्ष रूप से भी और अप्रत्यक्ष रूप से भी, हर संभव तरीके से!

इस समारोह के शुभ समापन के लिए कई मंगलकारी प्रार्थनाएं की गईं, जिनमें 'सत्य की प्रार्थना' भी शामिल थी। इसके बाद, परम पावन अपने पट्ट से उठे और मंदिर से निकल गए। लिफ्ट की ओर जाते समय उन्होंने अपने दोनों ओर खड़े जनसमूह को देखकर अत्यंत सौम्य और दीप्तिमान मुस्कान बिखेरी। तत्पश्चात, आंगन में वापस आकर वे अपने आवास की ओर लौटने के लिए एक गोल्फ-कार्ट में सवार हुए और रास्ते भर लोगों का अभिवादन स्वीकार करते आगे बढ़ गए।

## ◆ ०२. ११वें पंचेन लामा का ३७वां जन्मदिन समारोह

२८ अप्रैल, २०२६

ताशी ल्हुनपो मठ (निर्वासन में), बाइलाकुप्पे, कर्नाटक, २५ अप्रैल, २०२६

दक्षिण भारत के बाइलाकुप्पे स्थित ताशी ल्हुनपो मठ में २५ अप्रैल, २०२६ शनिवार को निर्वासित तिब्बती समुदाय ने परम पावन ११वें पंचेन लामा जेत्सुन तेनजिन गेदुन येशे त्रिनले फुंट्सोक पालजांगपो (गेदुन चोएक्यी न्यिमा) का ३७वां जन्मदिन पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया। इस भव्य समारोह में आध्यात्मिक भक्ति, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और नए सिरे से वैश्विक समर्थन का संगम देखने को मिला, जो एक पवित्र वंश के प्रति आदर के साथ ही न्याय, पहचान तथा सत्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस कार्यक्रम की शोभा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के तहत उच्च संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिष्ठित गणमान्य लोगों ने बढ़ाई। मुख्य अतिथि सिक्योंग पेन्पा शेरिंग थे। विशेष अतिथियों में निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल, तिब्बती सर्वोच्च न्याय आयोग की मुख्य न्यायाधीश येशे वांगमो और परम पावन दलाई लामा के कार्यालय से कैबिनेट सचिव लोबसांग जिन्पा शामिल थे। इस सभा में मठ के वरिष्ठ अधिकारियों, बाइलाकुप्पे के क्षेत्रीय और बस्ती प्रतिनिधियों, विभिन्न मठों और गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों तथा आम तिब्बतियों का भी स्वागत किया गया। उनकी उपस्थिति ने पंचेन लामा की विरासत और तिब्बती मुद्दे के प्रति कायम संस्थागत एकता और नैतिक स्पष्टता को रेखांकित किया।

दिन की शुरुआत मठ में होने वाली विस्तृत प्रार्थनाओं के साथ हुई, जिनमें परम पावन दलाई लामा के दीर्घायु होने तथा ११वें पंचेन लामा के कल्याण

और उनके शीघ्र ही सार्वजनिक जीवन में आने के लिए आशीर्वाद मांगा गया। पारंपरिक वाद्ययंत्रों की संगत के साथ भिक्षुओं के लयबद्ध मंत्रोच्चार ने पूरे मठ को एक गहन चिंतनशील और पवित्र वातावरण से भर दिया।

समारोह के दौरान ताशी ल्हुनपो मठ के महंत रिनपोछे ने इस अवसर की गरिमा बताते हुए एक आधिकारिक बयान पढ़ा। सिक्योंग पेम्पा शेरिंग, स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और कैबिनेट सचिव लोबसांग जिन्पा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अपने भाषण में स्पीकर ने दलाई लामा और पंचेन लामा के बीच अद्वितीय आध्यात्मिक गुरु-शिष्य संबंध पर प्रकाश डाला और तिब्बती धर्म, भाषा और संस्कृति में १०वें पंचेन लामा, चोएक्यी ग्यालत्सेन के अभूतपूर्व योगदान के लिए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने ११वें पंचेन लामा के लापता होने को लेकर गहरी चिंता भी जताई। ११वें पंचेन लामा को परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता दी गई थी, जिसके बाद ३१ साल से भी पहले चीनी अधिकारियों द्वारा उन्हें जबरन गायब कर दिया गया, जिनकी सेहत और ठिकाना अभी भी अज्ञात है। इससे वैश्विक स्तर पर चिंता और अविश्वास लगातार बढ़ रहा है।

अन्य वक्ताओं में नगा सांग्ये तेनदार, कालजांग ल्हामो और द्रुक कोनचोक जैसे सम्मानित विद्वान और शिक्षक शामिल थे। इन हस्तियों ने पंचेन लामा के आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण पंचेन लामा के वैश्विक प्रतीकात्मक महत्व की पुनःपुष्टि थी। यह घोषणा की गई कि अमेरिका की नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एनईडी) ने अपना प्रतिष्ठित २०२५ का डेमोक्रेसी सर्विस मेडल ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा को प्रदान किया है। इस मेडल को ताशी ल्हुनपो मठ के महंत द्वारा औपचारिक रूप से जनता के सामने प्रदर्शित किया गया। यह अंतरराष्ट्रीय एकजुटता का एक शक्तिशाली प्रतीक था और पंचेन लामा को धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और सांस्कृतिक विनाश के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतिनिधित्व करने वाली एक स्थायी हस्ती के रूप में मान्यता प्रदान करने वाला आयोजन था।

यह समारोह कई महत्वपूर्ण प्रकाशनों के विमोचन और लोकार्पण के साथ एक महत्वपूर्ण बौद्धिक और सांस्कृतिक मील का पत्थर भी साबित हुआ। इनमें १०वें पंचेन लामा द्वारा लिखित ऐतिहासिक ७०,००० वर्णों वाली (लगभग १४,००० शब्द) याचिका' शामिल थी। यह याचिका तिब्बत में चीनी नीतियों की सबसे साहसी आलोचनाओं में से एक है। इसके साथ ही समकालीन विद्वत्तापूर्ण कार्य भी प्रस्तुत किए गए, जो इसके निरंतर महत्व को प्रासंगिक बनाते हैं। एक अन्य प्रमुख प्रकाशन प्रतिष्ठित विद्वान काचेन लोबसांग जोत्पा द्वारा लिखित एक जीवनी थी। वे १०वें पंचेन लामा के पूर्व छात्र और ताशी ल्हुनपो मठ के पूर्व महंत की जीवनी थी। उनका यह कार्य भारत और तिब्बत के बीच स्थायी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करता है।

ताशी ल्हुनपो मठ के छात्रों ने तिब्बती, अंग्रेजी और हिंदी में पंचेन लामा के जीवन और विरासत पर भाषण देकर समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक उत्कृष्टता को भी मान्यता दी गई, जिसमें कविता, निबंध लेखन, वाद-विवाद और परीक्षाओं में उपलब्धियों के लिए उत्कृष्ट छात्रों को सम्मानित किया गया। वार्षिक तांत्रिक वाद-विवाद, लिखित परीक्षाओं और प्रमुख शैक्षणिक मूल्यांकनों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य और विशेष अतिथियों को भी सम्मान के प्रतीक-चिह्न भेंट किए गए।

समारोह का समापन जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ, जिसमें छात्रों और स्थानीय समुदाय के सदस्यों द्वारा पारंपरिक तिब्बती गीत और नृत्य प्रस्तुत किए गए। ये प्रस्तुतियां एक ऐसी जुझारू संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति थीं, जो विस्थापन और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद फल-फूल रही है। समारोह का समापन मठ प्रशासन की ओर से औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

निर्वासन में स्थित ताशी ल्हुनपो मठ में ११वें पंचन लामा के ३७वें जन्मदिन का समारोह, आस्था, पहचान और स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में उनके चिरस्थायी महत्व की पुनःपुष्टि करता है। इसने बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करने में तिब्बती लोगों के सामने आने वाली व्यापक चुनौतियों को भी उजागर किया।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण और मानवीय गरिमा के सवालों से जूझना पंचेन लामा की विरासत, जुझारूपन की शांत शक्ति, सत्य तथा मेल-मिलाप की चिरस्थायी आशा की शक्तिशाली याद दिलाता है। बाइलाकुप्पे में यह जमावड़ा केवल जन्मदिन समारोह नहीं था, बल्कि एक सामूहिक संकल्प की पुनःपुष्टि थी। यह संकल्प याद रखने का, विरोध करने का और स्वतंत्रता तथा आध्यात्मिक अखंडता की खोज को नवीनीकृत करने का रहा है।

## ◆ ०३. सिक्योंग ने तिब्बत संग्रहालय की 'सीमांत कूटनीति' पर अस्थायी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, सर बेसिल गोल्ड की पोती भी शामिल हुईं

०३ अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। सिक्योंग पेम्पा शेरिंग ने आज ०३ अप्रैल की सुबह तिब्बत संग्रहालय में, फ्रांसिस सी. कटलर के साथ मिलकर संग्रहालय की अस्थायी प्रदर्शनी, 'सीमांत कूटनीति: ब्रिटेन, तिब्बत और सर बेसिल गोल्ड' का उद्घाटन किया। कटलर सर बेसिल जॉन गोल्ड की पोती हैं। सर बेसिल ने १९३५ से १९४५ तक सिक्किम में ब्रिटिश राजनीतिक अधिकारी के रूप में कार्य किया था।

यह प्रदर्शनी सर बेसिल गोल्ड की पुस्तक 'द ज्वेल इन द लोटस: रिकलेक्शंस ऑफ एन इंडियन पॉलिटिकल ऑफिसर' पर आधारित है। पुस्तक में तिब्बत के ग्यान्त्से में ब्रिटिश व्यापार एजेंट रोजी वियर के उत्तराधिकारी के रूप में उनकी नियुक्ति से लेकर युवा १४वें दलाई लामा के स्वर्ण राज्याभिषेक समारोह में उनकी उपस्थिति तक के उनके मिशन के ऐतिहासिक अभिलेखों की पड़ताल की गई है। यह प्रदर्शनी काशाग (तिब्बती मंत्रिमंडल) को उनके द्वारा प्रस्तुत एक अनुदित विवरण को भी रेखांकित करती है, जिसमें परम पावन १४वें दलाई लामा की खोज और उनकी स्थापना की प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण किया गया था।

प्रदर्शित वस्तुओं में दो दुर्लभ ऐतिहासिक दस्तावेज शामिल हैं, जो कभी सर बेसिल गोल्ड के थे और जिन्हें पिछले वर्ष उनके परिवार द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन को उदारतापूर्वक दान किया गया था। इन दस्तावेजों को, स्वतंत्र तिब्बत सरकार के पूर्व वित्त मंत्री सेपोन वांगचुक देदेन शाकाबपा द्वारा पहने गए पारंपरिक तिब्बती परिधानों के एक सेट के साथ प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है। ये सभी कलाकृतियां मिलकर, उस कालखंड के दौरान

आंतरिक शासन और विदेश मामलों- दोनों ही क्षेत्रों में तिब्बत की 'वास्तविक' स्वतंत्रता की गवाही देती हैं।

इस उद्घाटन समारोह में फ्रांसिस सी. कटलर के पति जोनाथन एम. कटलर, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के सचिव कर्मा चोयिंग, वित्त सचिव शेरिंग धोंडुप, डीआईआईआर के अतिरिक्त सचिव नामग्याल सेवांग, तिब्बत संग्रहालय के निदेशक तेनजिन तोपदेन और तिब्बत नीति संस्थान के शोधकर्ताओं सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। साथ ही, विभिन्न तिब्बती संस्थानों के वे सदस्य भी मौजूद थे, जिन्होंने उस काल के तिब्बत के कृष्ण कंवल द्वारा किए गए चित्रण को पुनः सृजित करने में योगदान दिया था। इस चित्रण को प्रदर्शनी के एक विशेष अनुभाग में प्रदर्शित किया गया है। कृष्ण कंवल भारतीय कला में आधुनिकतावाद के शुरुआती अग्रदूतों में से एक थे। वे ब्रिटिश मिशन के दौरान सर बेसिल गोल्ड के साथ तिब्बत गए थे। इस कार्यक्रम में सिक्योंग पेम्पा शेरिंग ने औपचारिक रूप से रिबन काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिसके बाद उन्होंने वहां प्रदर्शित सभी चीजों का पूरा दौरा किया।

संक्षिप्त चाय-नाश्ते के बाद सभी मेहमान 'द तिब्बत म्यूजियम' के हॉल में प्रदर्शनी के बारे में आधिकारिक जानकारी लेने के लिए इकट्ठा हुए। इस कार्यक्रम का संचालन म्यूजियम की कर्मचारी तेनजिन डोल्मा ने किया।

द तिब्बत म्यूजियम के निदेशक तेनजिन टॉपडेन ने स्वागत भाषण दिया और प्रदर्शनी का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने बताया कि इस प्रदर्शनी की प्रेरणा कहां से मिली, इसके अलग-अलग हिस्से कौन-कौन से हैं और इसमें दिखाए गए दस्तावेज तथा अन्य सामग्री कैसे जुटाई गई।

अपने संबोधन में सचिव कर्मा चोयिंग ने द तिब्बत म्यूजियम के मुख्य उद्देश्यों पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि अस्थायी प्रदर्शनियों, स्थायी प्रदर्शनियों, जगह-जगह घूमने वाली प्रदर्शनियों और ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसी पहलों के जरिए दुनिया भर के लोगों को तिब्बत के मुद्दे के बारे में जागरूक करने में म्यूजियम की बहुत अहम भूमिका है। उन्होंने कहा, 'इस खास प्रदर्शनी का ऐतिहासिक महत्व तो है ही, साथ ही यह आज के तिब्बती संघर्ष से भी जुड़ी हुई है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि तिब्बत पर चीन के दशकों लंबे कब्जे के बाद तिब्बती पहचान के सामने आने वाली चुनौतियां और भी बढ़ गई हैं।'

सचिव कर्मा चोयिंग ने आगे इस बात पर भी रोशनी डाली कि १९५१ से पहले तिब्बत कानूनी तौर पर और वास्तव में भी एक स्वतंत्र देश था। उन्होंने उस समय तिब्बत के साथ सर बेसिल गोल्ड के जुड़ाव के महत्व को भी रेखांकित किया। साल १९४७ दुनिया भर में हो रहे बड़े बदलावों की दहलीज पर खड़ा था। जैसे-जैसे पुराने साम्राज्य खत्म हो रहे थे और नए देश बन रहे थे, तिब्बत भी अपनी पहचान को स्थापित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़ रहा था। उस समय सिक्किम में ब्रिटिश राजनीतिक अधिकारी और तिब्बत तथा ब्रिटिश भारत के बीच बातचीत के एक अहम माध्यम सर बेसिल गोल्ड इस रिश्ते में एक खास जगह रखते थे। उन्होंने आगे कहा, आज यहां दिखाए गए दस्तावेज इन रिश्तों को पूरी स्पष्टता और प्रामाणिकता के साथ सामने लाते हैं। ताकत्रा रिनपोछे का पत्र तिब्बत में राज-प्रतिनिधि शासन (रिजेंसी पीरियड) के दौरान तिब्बती सरकार की आधिकारिक आवाज को दर्शाता है। वहीं, परम पावन १४वें दलाई लामा का पत्र एक अलग, लेकिन उतनी ही शक्तिशाली अहमियत रखता है। ये दोनों पत्र मिलकर एक सीधे-सादे, लेकिन बहुत गहरे सच की पुष्टि करते हैं।

फ्रांसिस सी. कटलर ने इस कार्यक्रम में शामिल होने और एक दिन पहले परम पावन १४वें दलाई लामा से मिलने का अवसर पाने पर अपनी खुशी जाहिर की। अपनी किताब 'द ज्वेल इन द लोटस: रिकलेक्शंस ऑफ एन इंडियन पॉलिटिकल ऑफिसर' के दूसरे अध्याय की शुरुआती पंक्तियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 'आधी ईंट', जो उनके दादाजी को अचानक मिली थी, वही उनके दादाजी के तिब्बत के साथ लंबे जुड़ाव और आज इस प्रदर्शनी के लिए हुए इस जमावड़े की वजह है। उन्होंने याद किया कि कैसे सर बेसिल गोल्ड परम पावन १३वें दलाई लामा के साथ भारत में उनके निर्वासन से तिब्बत वापसी के सफर में कुछ दूर तक गए थे और उन्हें आधुनिकीकरण की कोशिशों के तहत चार तिब्बती लड़कों, जिन्हें 'चार रग्बी लड़के' कहा जाता था, को इंग्लैंड लाने का काम सौंपा गया था। उन्होंने कहा, 'हो सकता है कि रग्बी लड़कों के साथ मेरे पिता के जुड़ाव की वजह से ही हमारे परिवार ने युवा तिब्बती शरणार्थियों को इंग्लैंड में कुछ समय बिताने के लिए आमंत्रित किया हो। इस तरह मैं कई तिब्बती भाइयों और बहनों के साथ बड़ी हुई।'

कटलर ने बताया कि तिब्बत और तिब्बती संस्कृति में उनकी शुरुआती दिलचस्पी उनके दादाजी की किताबों से जागी थी। उन्होंने आगे याद किया कि कैसे उनके परिवार की तीन पीढ़ियों को परम पावन से मिलने का सौभाग्य मिला, उन्होंने इसे 'एक जीवन, मेरे परिवार की तीन पीढ़ियां' कहकर संबोधित किया। उन्होंने बताया कि २०२४ में मां के गुजरने के बाद ही उन्हें और उनके पति को उनके माता-पिता के सामान के बीच कुछ दस्तावेज और दूसरी चीजें मिलीं, जिन्हें उन्होंने खुशी-खुशी 'द तिब्बत म्यूजियम' को दान कर दिया।

अपने मुख्य भाषण में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने फ्रांसिस सी. कटलर को उनके दान के लिए धन्यवाद दिया और आजाद तिब्बत की सरकार के पश्चिमी देशों के साथ ऐतिहासिक जुड़ावों के बारे में विस्तार से बताया। सिक्योंग ने तिब्बत आने वाले पश्चिमी लोगों के लंबे इतिहास पर जोर दिया, जो १७वीं सदी की शुरुआत से चला आ रहा है और इसे तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति के सबूत के तौर पर पेश किया, ताकि पीएलए के कब्जे से पहले के तिब्बत के इतिहास के बारे में चीन के मनगढ़ंत दावों का जवाब दिया जा सके।

पिछले साल लंदन की अपनी आधिकारिक यात्रा को याद करते हुए सिक्योंग ने कहा, 'हमने यूनाइटेड किंगडम को सबसे ज्यादा अहमियत दी, क्योंकि ब्रिटिश भारत के साथ हमारे रिश्ते १७७४ से चले आ रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा कि लंदन में विद्वानों के साथ हुई चर्चाओं का मकसद तिब्बत के साथ ऐतिहासिक रिश्तों पर एक पुस्तक लिखना था, ताकि ब्रिटेन के राजनीतिक नेताओं की नई पीढ़ी को ब्रिटिश भारत और ब्रिटेन के साथ तिब्बत के ऐतिहासिक जुड़ावों के बारे में जानकारी दी जा सके। सिक्योंग ने यह भी बताया कि इसी तरह के अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज निजी हाथों में हैं, जिन्हें खरीदना अक्सर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के लिए संभव नहीं होता, फिर भी तिब्बत के ऐतिहासिक दावों के समर्थन में प्रमाण के तौर पर उनका महत्व उतना ही अधिक है। दर्शकों में मौजूद युवा तिब्बतियों को संबोधित करते हुए सिक्योंग ने उनसे आग्रह किया कि वे तिब्बत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और भविष्य में होने वाले समर्थन प्रयासों में सहयोग देने के लिए 'द ज्यूल इन द लोटस: रिकलेक्शंस ऑफ एन इंडियन पॉलिटिकल ऑफिसर' जैसे ऐतिहासिक वृत्तांतों का अध्ययन करें।

संग्रहालय के कर्मचारी तेनजिन खेत्सुन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने के साथ ही इस समारोह का समापन हो गया।

## ◆ ०४. कालोन थारलम डोल्मा चांगरा ने दिल्ली में नए केवीएस कमिश्नर विकास गुप्ता से शिष्टाचार भेंट की

२१ अप्रैल, २०२६

दिल्ली। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की शिक्षा कालोन (मंत्री) थारलम डोल्मा चांगरा और शिक्षा सचिव जिग्मे नामग्याल ने २० अप्रैल, २०२६ को दिल्ली में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय विद्यालय संगठन के नव-नियुक्त कमिश्नर श्री विकास गुप्ता से शिष्टाचार भेंट की।

नए कमिश्नर का स्वागत करने के अवसर पर शिक्षा कालोन ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) का एक संक्षिप्त परिचय दिया, केंद्रीय तिब्बती स्कूल प्रशासन से सभी स्कूलों के हस्तांतरण के पीछे के कारणों को स्पष्ट किया और इन संस्थानों के 'संभूत तिब्बती स्कूल सोसाइटी' को हस्तांतरित होने के बाद भी लगातार मिल रहे वित्तीय सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया।

बैठक के दौरान, बजट अधिसूचना जारी होने में हुई देरी को लेकर सम्मानपूर्वक चिंता व्यक्त की गई। यह अधिसूचना वित्तीय वर्ष के अंत में जारी की गई थी, जिसके कारण आवंटित धनराशि का प्रभावी ढंग से उपयोग सीमित हो गया था। संभूत तिब्बती स्कूल सोसाइटी के तीन प्रमुख बजट शीर्षों के अंतर्गत आने वाली विशेष चुनौतियों को रेखांकित किया गया। इनमें स्कूल फर्नीचर जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे की एकमुश्त खरीद के लिए धनराशि की अपर्याप्तता का मुद्दा प्रमुख था, विशेष रूप से इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इस सोसाइटी के प्रशासन के अंतर्गत बड़ी संख्या में शिक्षण संस्थान आते हैं। इस संबंध में बढ़ती लागतों और संस्थानों की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप, बजट आवंटन में वृद्धि किए जाने का अनुरोध प्रस्तुत किया गया।

कार्यालय में संबंधित अधिकारियों के साथ चर्चा के उपरांत यह शिष्टाचार भेंट संपन्न हुई।

- सीटीए के शिक्षा विभाग की रिपोर्ट

## ◆ ०५. एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक ने परम पावन दलाई लामा के इस कथन का समर्थन किया कि दलाई लामा संस्था जारी रहेगी

०४ अप्रैल, २०२६

बोधगया। एशियन बुद्धिस्ट्स कॉन्फ्रेंस फॉर पीस (एबीसीपी) ने 'करुणा वर्ष' के तहत ०१ अप्रैल को बोधगया में 'बोधिसत्व, प्रज्ञा और करुणा' विषय पर अपनी १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक आयोजित की।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के धर्म और संस्कृति विभाग के सचिव धोंडुल दोरजी ने एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक और एबीसीपी द्वारा परम पावन के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लिया।

सुबह ०९:०० बजे मुख्य अतिथि लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना के कार्यक्रम स्थल पर आगमन के साथ ही उद्घाटन समारोह शुरू हुआ। क्यब्जे योंगजिन सातवें लिंग रिनपोछे, क्यब्जे कुंडेलिंग तात्सक जेद्रुंग रिनपोछे, क्यब्जे २०वें कुशोक बकुला रिनपोछे और नेचुंग कुतेन के साथ मिलकर मुख्य अतिथि ने पारंपरिक रूप से मक्खन के दीपक प्रज्वलित किए, जबकि उपस्थित जनसमूह ने महायान और थेरवाद- दोनों परंपराओं के अनुसार मंगलकामनाएं अर्पित कीं।

उद्घाटन समारोह के बाद एबीसीपी के सचिव सोनम वांगचुक शाक्सपो ने स्वागत भाषण दिया, जिसके बाद एबीसीपी के अध्यक्ष परम पूज्य खेनसुर लामा गबजू डेम्बरेल चोइजमत्स ने अपना संबोधन दिया। इसके उपरांत एबीसीपी के अध्यक्ष द्वारा मुख्य अतिथि को सम्मान के प्रतीक स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

इसके बाद कार्यक्रम में कलाकार मधुश्री चौधरी द्वारा बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाली एक नृत्य प्रस्तुति दी गई।

इसके पश्चात, क्यब्जे १९वें लोचेन तुलकु ने एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक के लिए परम पावन दलाई लामा का संदेश पढ़कर सुनाया, जबकि उप सचिव सोनम वांगचुक शाक्सपो ने क्यबगोन साक्या गोंगमा रिनपोछे का संदेश प्रस्तुत किया। संसदीय मामलों के मंत्री और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री श्री किरण रिजिजू जी, श्रीलंका के राष्ट्रपति माननीय अनुरा कुमार दिसानायके, मंगोलिया में गंडांटेगचिनलेन मठ के महंत जेत्सुन दोरजी, रूस के बौद्ध पारंपरिक संघ के प्रमुख पंडितो खंबो लामा दंबा आयुषेव और एबीसीपी बांग्लादेश केंद्र के प्रमुख परम आदरणीय बुद्धप्रिय महाथेरो के संदेशों को वहां वितरित किया गया।

क्याब्जे योंगजिन लिंग चोक्त्रुल रिनपोछे, क्याबजे कुंडेलिंग तात्सक जेडरुंग रिनपोछे और विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में भाषण दिए। इसके बाद मुख्य अतिथि का संबोधन हुआ।

अरुणाचल प्रदेश खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री मालिंग गोम्बू ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इसके साथ ही परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह का सफलतापूर्वक समापन हो गया।

दोपहर के भोजन के बाद एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक जारी रही । इस बैठक में १४ सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उत्तर कोरिया इसमें उपस्थित नहीं हुआ। दोपहर १:०० बजे, अध्यक्ष परम पूज्य खेनसुर लामा गबजू डेम्बरेल चोइजमत्स ने प्रारंभिक संबोधन दिया, जिसके बाद एबीसीपी के महासचिव ने वर्ष २०२४ से २०२६ तक की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद, एशियाई बौद्ध परिषद के उप सचिव ने एबीसीपी के गया स्थित समन्वयक कार्यालय की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और एबीसीपी का बजट एक अन्य वरिष्ठ सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया गया।

बोधगया घोषणा पर चर्चा के दौरान सीटीए के धर्म और संस्कृति विभाग के सचिव धोंडुल दोरजी ने परम पावन १४वें दलाई लामा के जीवन और उपलब्धियों, तथा 'करुणा वर्ष' के दौरान सीटीए द्वारा की गई पहलों के बारे में बात की। उन्होंने पिछले वर्ष धर्मशाला में आयोजित १५वें तिब्बती धार्मिक सम्मेलन के दौरान परम पावन द्वारा अपने पुनर्जन्म की परंपरा को जारी रखने के संबंध में की गई पुष्टि पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला। सचिव ने इस कार्यकारी परिषद की बैठक के दौरान परम पावन के ९०वें जन्मदिन का समारोह आयोजित करने के लिए एबीसीपी के प्रति अपनी

सराहना भी व्यक्त की।

बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकृत उक्त घोषणाओं के ११ बिंदुओं में से पांचवें बिंदु में परम पावन दलाई लामा को उनके ९०वें जन्मदिन के अवसर पर बधाई दी गई और शांति, अहिंसा, अंतर-धार्मिक सद्भाव तथा सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देने में उनके आजीवन योगदान को स्वीकार किया गया।

छठे बिंदु में एबीसीपी की १२वीं आम सभा में अपनाए गए उस निर्णय को दोहराया गया, जिसके तहत हर साल ०६ जुलाई (परम पावन दलाई लामा का जन्मदिन) को 'सार्वभौमिक करुणा दिवस' के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया था। इसी प्रकार, सातवें बिंदु में परम पावन दलाई लामा द्वारा ०२ जुलाई २०२५ को धर्मशाला में अपने पुनर्जन्म के संबंध में जारी किए गए बयान का सर्वसम्मति से समर्थन किया गया। इस बयान में यह पुनः पुष्टि की गई थी कि दलाई लामा की संस्था जारी रहेगी और भविष्य के पुनर्जन्म को मान्यता देने का एकमात्र अधिकार 'गाडेन फोडरंग ट्रस्ट' के पास होगा। कार्यकारी ने इस बात पर भी जोर दिया कि किसी भी सरकार, संगठन या व्यक्ति को इस लंबे समय से चली आ रही पवित्र आध्यात्मिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। यह अधिकार पूरी तरह से 'गाडेन फोडरंग ट्रस्ट' के पास ही सुरक्षित है।

इस घोषणा को बैठक में उपस्थित प्रतिभागियों का जबरदस्त समर्थन मिला। बैठक के समापन के बाद सभी प्रतिभागी परिषद के क्षेत्रीय कार्यालय में एकत्रित हुए, एक-दूसरे से अपना परिचय दिया और एक सामूहिक फोटो खिंचवाई। इसी के साथ एबीसीपी की १६वीं कार्यकारी परिषद की बैठक का विधिवत समापन हो गया।

- सीटीए के धर्म एवं संस्कृति विभाग की रिपोर्ट

## ◆ ०६. ४३वें शाक्य त्रिजिन, क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे ने ऑस्ट्रेलिया के संघीय वित्त मंत्री से मुलाकात की, 'शांति मंदिर' का उद्घाटन किया

१० अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न पहुंचने पर ४३वें शाक्य त्रिजिन क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे ने ०६ मार्च, २०२६ को कई आध्यात्मिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

शाक्य चोखोर ल्हुनपो और विक्टोरिया के तिब्बती समुदाय के अनुरोध पर क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे ने 'तीन क्रोधित देवताओं' का संयुक्त अभिषेक किया, आम लोगों को दर्शन दिए और 'फुरपा (वज्रकिलाय)' पर उपदेश दिए।

रिनपोछे ने १८ मार्च को लामा चोडाक रिनपोछे के 'सिबा रिट्रीट सेंटर' का दौरा किया, जहां उन्होंने उपदेश दिए, जिनमें 'हेवज्र दीक्षा' और अन्य धर्म-संबंधी शिक्षाएं शामिल थीं।

रिनपोछे ने २८ मार्च को नवनिर्मित 'शाक्य शांति मंदिर' के उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई। इस समारोह में विशिष्ट अतिथियों में ऑस्ट्रेलिया की संघीय वित्त मंत्री माननीय केटी गैलाघर, कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि कर्मा सिंगे, क्षेत्र के एक वरिष्ठ आर्कबिशप और कई अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्ति शामिल थे। इस कार्यक्रम में लामा चोडाक रिनपोछे और उनके केंद्र के कई संरक्षकों के साथ-साथ स्थानीय तिब्बती निवासी और अन्य श्रद्धालु भी उपस्थित थे, जिनकी कुल संख्या लगभग ३०० थी।

सभा के दौरान क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे और माननीय केटी गैलाघर के भाषणों के बाद प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने इस अवसर के लिए परम पावन १४वें दलाई लामा का संदेश पढ़कर सुनाया।

इस कार्यक्रम में दस संरक्षकों को 'थांगका' भेंट किए गए और मंदिर का औपचारिक उद्घाटन किया गया। साथ ही, कैनबरा स्थित तिब्बती और भूटानी श्रद्धालुओं द्वारा जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गईं। क्याबगोन ग्याना वज्र रिनपोछे ने ३० मार्च को आम जनता को दीर्घायु दीक्षा प्रदान की, एसीटी तिब्बती समुदाय के सदस्यों को विशेष दर्शन दिए और ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा में स्थित 'साक्या टेम्पल ऑफ पीस' में वज्रकिलाया कागो आशीर्वाद और उपदेश दिए।

दोपहर में, रिनपोछे कैनबरा से ऑस्ट्रेलिया के दक्षिणी तट पर स्थित एक शहर, मिल्टन पहुंचे। वहां, रिनपोछे ने नोवरा के तिब्बती समुदाय के सदस्यों को वज्रकिलाया कागो आशीर्वाद और दर्शन दिए। दोपहर बाद रिनपोछे ने उल्लाडुल्ला हाई स्कूल में 'हृदय और मन की शिक्षा' विषय पर एक व्याख्यान दिया। शाम को रिनपोछे ने 'सिंबू परंपरा' के अनुसार, अवलोकितेश्वर की दीक्षा प्रदान की और धर्म के मार्ग पर नए आए कुछ सौभाग्यशाली लोगों को 'शरण व्रत' दिलाया।

'टेम्पल ऑफ पीस' के निर्माण कार्य की देखरेख करने वाले लामा चोएडक रिनपोछे १९८५ में ऑस्ट्रेलिया आकर बस गए थे। यहां उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा जारी रखने के साथ-साथ बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भी किया तथा ध्यान और उससे जुड़ी अन्य साधनाओं की शिक्षा दी। उन्होंने 'साक्या लोसाल चोड जोंग' सहित दस से अधिक धर्म केंद्रों की स्थापना की। इसके अलावा, उन्होंने परम पावन दलाई लामा, क्याबगोन साक्या गोंगमा रिनपोछे, ४२वें और ४३वें साक्या त्रिजिन रिनपोछे तथा दिवंगत साक्या गुरु चोग्ये त्रिचेन न्गावांग ख्येनराब थुप्तेन लेक्षय ग्यात्सो को ऑस्ट्रेलिया आमंत्रित किया और इस प्रकार हजारों समर्पित अनुयायियों के लिए 'मुक्ति के बीज' बोए। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के अनेक स्कूलों में बौद्ध मनोविज्ञान और नैतिकता की शिक्षा भी दी है तथा व्यापक स्तर पर सामुदायिक सेवा कार्य किए हैं। इन कार्यों के लिए उन्हें स्थानीय और संघीय, दोनों ही सरकारों से अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

वर्ष २०१७ में ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 'टेम्पल ऑफ पीस' की स्थापना के लिए भूमि का एक भूखंड (प्लॉट) आवंटित किया। पिछले कुछ वर्षों के दौरान, तिब्बती शैली में एक अत्यंत सुंदर मंदिर का निर्माण किया गया, जिसमें आंतरिक और बाहरी, सभी प्रकार की पवित्र वस्तुएं और प्रतीक स्थापित किए गए हैं। इसके साथ ही दिवंगत चोग्ये त्रिचेन न्गावांग ख्येनराब थुप्तेन लेक्षय ग्यात्सो की स्मृति में २८ फुट ऊंचे एक 'ज्ञान-स्तूप' का निर्माण कार्य भी पूर्ण किया गया। ४३वें शाक्य त्रिजिन, क्याबगोन ज्ञान वज्र रिनपोछे ने हेवज्र अनुष्ठान के माध्यम से एक दिवसीय अभिषेक संपन्न किया और ऑस्ट्रेलिया में पहली बार खोन परंपरा के वज्रकिलाय (दोरजे फुरपा) का तीन दिवसीय अभ्यास आयोजित किया गया। यह अभ्यास धर्म की शिक्षाओं के प्रसार और पूजनीय लामाओं की दीर्घायु को समर्पित था।

तिब्बती सांसद परम पूज्य लोपोन थुब्तेन ग्यालत्सेन द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट के अनुसार, यह आयोजन 'करुणा वर्ष' के उत्सव के भी अनुरूप है।

# ◆ ०७. सुरक्षा विभाग ने तिब्बती मुद्दे पर तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का सम्मान करने के लिए पहला 'तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन' आयोजित किया

२७ अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सुरक्षा विभाग ने २४ से २५ अप्रैल तक धर्मशाला में प्रशासनिक प्रशिक्षण और कल्याण सोसायटी केंद्र में दो दिवसीय 'तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन' का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों को उनके आजीवन समर्पण और सेवा के लिए सम्मानित और अभिनंदन करना था, जिसके दौरान तिब्बती स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान की मान्यता के रूप में उन्हें 'तिब्बत पदक' से सम्मानित किया गया।

सम्मेलन में कुल ८९ प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें स्वतंत्र तिब्बत के पूर्व तिब्बती सेना कर्मी, तिब्बती प्रतिरोध सेनानी, पूर्व लोड्रिक (१९६० में पूर्व तिब्बती गुरिल्ला सेनानियों द्वारा गठित एक संगठन) के सदस्य, सेवानिवृत्त 'धांगलोब' समुदाय के प्रतिनिधि, पूर्व राजनीतिक कैदी और परम पावन दलाई लामा के आवास के पूर्व सुरक्षा कर्मी शामिल थे। इस सभा में प्रतिभागियों की आयु सीमा में उल्लेखनीय विविधता देखने को मिली। सबसे अधिक आयु के प्रतिभागी ९६ वर्ष के थे, जबकि सबसे कम आयु के प्रतिभागी २७ वर्ष के थे।

उद्घाटन समारोह की शुरुआत मंच पर परम पावन दलाई लामा के चित्र के औपचारिक स्थापन और पूजन के साथ हुई। मुख्य अतिथि और विशेष अतिथियों ने 'मंडल' अर्पित किए, जिसके बाद नेचुंग मठ के भिक्षुओं द्वारा पारंपरिक अनुष्ठान और आह्वान किया गया। इसके उपरांत मक्खन के दीये जलाए गए, तिब्बती और भारतीय राष्ट्रगान गाए गए और खीर तथा मक्खन वाली चाय परोसी गई।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कार्यवाहक सिक्योंग थरलम डोल्मा चांगरा (शिक्षा विभाग की कालोन) और सुरक्षा विभाग की कालोन डोल्मा ग्यारी उपस्थित थीं। विशेष अतिथियों में तिब्बती न्याय आयुक्त दावा फुंकी और फाग्पा शेरिंग, तिब्बती सांसद तेन्पा यारफेल, सीटीए के विभिन्न विभागों के सचिव, केउत्सांग रिनपोछे, परम पावन दलाई लामा के कार्यालय के प्रतिनिधि और तिब्बत के तीन पारंपरिक प्रांतों के प्रतिनिधि शामिल थे।

अपने संबोधन में, कालोन डोल्मा ग्यारी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अपनी तरह का यह पहला सम्मेलन परम पावन दलाई लामा की ९०वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोहों के एक हिस्से के रूप में आयोजित किया गया था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह सभा तिब्बत के लिए अपना बलिदान देने वाले तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों और पूर्व सैनिकों को सम्मानित करने का एक अत्यंत उपयुक्त अवसर है।

उन्होंने कई लोगों को बधाई दी, जिनमें स्वतंत्र तिब्बत की सेना के पूर्व सदस्य भी शामिल थे। जिन लोगों को सम्मानित किया गया, उनमें मिंगुर (९६), थुब्रब (८८) और ताशी (८४) शामिल थे। लोड्रिक से ९१ वर्ष की आयु के चार लोगों- न्गावांग सुल्ट्रिम, केलसांग शेरिंग, सोनम ताशी और पाचेन को सम्मानित किया गया। इनके साथ ही, सेवानिवृत्त 'धांगलोब' समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व 'धापोन' न्यिमा ताशी (८१) को भी सम्मानित किया गया।

पूर्व राजनीतिक कैदियों को भी याद किया गया और सम्मानित किया गया, जिनमें केउत्सांग रिनपोछे शामिल थे, जिन्होंने चीनी जेलों में २० साल बिताए। इनके साथ ही जम्पा तेनजिन (१२ साल), लोबसांग योंटेन (२० साल से अधिक) और फुरबा पोन को सम्मानित किया गया। इन लोगों ने दो दशकों से अधिक समय तक जेल की कैद में बिताया है। सम्मानित किए गए अन्य लोगों में डिरिंग न्गावांग (९३), आनी फुंट्सोक डोल्मा, और परम पावन के पूर्व अंगरक्षक दल के सदस्य शामिल थे, जिनका नेतृत्व सोनम कर रहे थे। इनके साथ ही न्गारोंग आरती को भी सम्मानित किया गया।

कालोन डोल्मा ग्यारी ने इस बात पर जोर दिया कि यह सम्मेलन तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों के साहस और बलिदानों के प्रति एक श्रद्धांजलि है और उन सभी लोगों के प्रति भी, जिन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रमुख प्रतिरोध नेताओं के परिवार के सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया और सम्मानित किया गया। इनमें आंद्रुक गोन्पो ताशी की बेटी आंद्रुक तामदिन चोएकी और ल्हामो शेरिंग के बेटे तेनजिंग सोनम शामिल थे।

उन्होंने आगे कहा कि तिब्बत पर चीनी कब्जे के दौरान, तिब्बतियों ने जोरदार प्रतिरोध किया और आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया। निर्वासन में जाने के लिए मजबूर होने के बावजूद, उनका प्रतिरोध तब भी जारी रहा, जब परम पावन दलाई लामा निर्वासन में भारत आ गए थे।

आंद्रुक तामदिन चोएकी ने अपने दिवंगत पिता के अडिग संघर्ष को याद किया और तिब्बतियों के बीच एकता और शक्ति का आह्वान किया। तेनजिंग सोनम ने स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति आभार व्यक्त किया और तिब्बती शहीदों को श्रद्धांजलि दी। साथ ही उन्होंने अपने पिता का एक वीडियो संदेश भी दिखाया, जिसे उनकी मृत्यु से कई साल पहले रिकॉर्ड किया गया था।

मुख्य अतिथि कालोन थारलाम डोल्मा चांगरा ने स्वतंत्रता सेनानियों की बहादुरी और योगदान की गहरी सराहना की। उन्होंने १९५९ के दौरान प्रतिरोध से जुड़े अपने परिवार के निजी अनुभवों को याद किया और उन गुमनाम नायकों के बलिदानों को सम्मानित किया, जिनके बारे में ज्यादा चर्चा नहीं होती। उन्होंने भी तिब्बतियों के बीच एकता और दृढ़ता बनाए रखने के आह्वान को दोहराया। उद्घाटन सत्र का समापन सुरक्षा सचिव कर्मा रिंचेन द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिसके बाद सभी प्रतिभागियों की एक सामूहिक तस्वीर ली गई।

इसके बाद के सत्रों में परम पावन दलाई लामा की विरासत को संरक्षित करने और सुरक्षा विभाग के कार्यों पर प्रतिक्रिया एकत्र करने पर चर्चाएं केंद्रित रहीं। दूसरे दिन, इस सम्मेलन का समापन अनुशंसा रिपोर्ट की प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसे प्रतिभागियों द्वारा अनुमोदित किया गया।

समापन समारोह के दौरान, स्वतंत्रता सेनानियों और प्रतिनिधियों को उनकी सेवाओं के सम्मान में विशेष 'तिब्बत पदक' प्रदान किए गए। कालोन डोल्मा ग्यारी ने काशाग के परामर्श से भविष्य की पहलों में इन सिफारिशों को शामिल करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

उन्होंने तिब्बत पदक के ऐतिहासिक महत्व पर भी विस्तार से बात की और बताया कि इसकी शुरुआत २०वीं सदी की शुरुआत में ब्रिटिश-तिब्बत युद्ध के दौरान पदक देने की प्रथाओं से हुई थी। यह पदक तिब्बत की स्वतंत्र विरासत का प्रतीक है और उन लोगों को सम्मानित करता है जिन्होंने इसके उद्देश्य में योगदान दिया है।

इस कार्यक्रम के अवसर पर ११वें पंचेन लामा जेट्सुन तेनजिन गेधुन येशी त्रिनले फुंटसोक पाल सांगपो (जिन्हें गेधुन चोएक्यी न्यिमा के नाम से भी जाना जाता है) की ३७वीं जयंती भी मनाई गई। इस अवसर पर केक काटने का समारोह आयोजित किया गया और एक स्थानीय नृत्य मंडली द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं।

२७ अप्रैल की सुबह प्रतिभागियों को परम पावन दलाई लामा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद, सुरक्षा कालोन डोल्मा ग्यारी की उपस्थिति में सुगलाखंग के प्रांगण में इस सम्मेलन का संक्षिप्त समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर तिब्बत के प्रमुख गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रतिभागियों को पारंपरिक खटक भेंट कर सम्मानित किया गया।

## ◆ ०८. उत्तरी अमेरिका के पहले तिब्बती सप्ताहांत स्कूलों ने 'करुणा वर्ष' के उपलक्ष्य में कला और साहित्य प्रतियोगिता का आयोजन किया

१० अप्रैल, २०२६

न्यूयॉर्क (अमेरिका)। उत्तरी अमेरिका स्थित तिब्बती संघों (एनएटीए) के अंतर्गत आने वाले सप्ताहांत स्कूलों के बीच पहली बार सांस्कृतिक प्रतियोगिता का सफल आयोजन ०४ अप्रैल, २०२६ को न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी तिब्बती समुदाय के 'फुंट्सोक दिशे कम्युनिटी हॉल' में किया गया। यह एक ऐतिहासिक पहल था। एनएटीए की २३वीं आम सभा के दौरान पारित प्रस्ताव के अनुरूप इस कार्यक्रम का संयुक्त आयोजन 'ऑफिस ऑफ तिब्बत' और 'न्यूयॉर्क तथा न्यू जर्सी के तिब्बती समुदाय' द्वारा किया गया था।

इस कार्यक्रम में कई विशिष्ट अतिथि शामिल हुए, जिनमें परम पावन दलाई लामा के निजी दुभाषिया गेशे थुब्तेन जिन्पा, प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप और हिमालयन कल्चरल सेंटर तथा दानांग फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक लामा सेवांग रिनपोछे प्रमुख थे। इनके अलावा तिब्बती संघों के नेता, धार्मिक प्रतिनिधि, सेवानिवृत्त अधिकारी और आम लोग उपस्थित थे।

इस प्रतियोगिता के मुख्य उद्देश्य- १६वीं कशाग (मंत्रिमंडल) द्वारा परम पावन के जन्मदिन के अवसर पर विश्व स्तर पर 'करुणा वर्ष' मनाने के निर्णय का सम्मान करना और उसका समर्थन करना, प्रतियोगिता के माध्यम से तिब्बती युवाओं में तिब्बती भाषा और संस्कृति के प्रति अधिक रुचि जगाना, उत्तरी अमेरिका के सप्ताहांत स्कूलों के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों का मनोबल बढ़ाना और इन स्कूलों की उपलब्धियों को व्यापक जनसमुदाय के समक्ष प्रदर्शित करना- थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह ०९:०० बजे तिब्बती संपर्क अधिकारी कुंगा ताशी द्वारा प्रारंभिक घोषणा करने के साथ हुई। इसके बाद मुख्य और विशेष अतिथियों द्वारा स्वागत भाषण दिए गए, जिसके उपरांत परम पावन के पवित्र चित्र के समक्ष श्वेत स्कार्फ (खतक) अर्पित करने की रस्म पूरी की गई। इस अवसर पर 'लोसाल क्येतसाल स्कूल' के छात्रों ने तिब्बती राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में, मुख्य अतिथि ने छात्रों और अभिभावकों की इतनी विशाल उपस्थिति देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यह प्रतियोगिता तिब्बती सामुदायिक संघों के मार्गदर्शन में छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा वर्षों से किए जा रहे समर्पण और सामूहिक प्रयासों का ही एक प्रतिबिंब है।

प्रारंभ में अपने भाषण में प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप ने चीन की हाल ही में लागू की गई उन नीतियों पर चिंता जताई, जिनका मकसद 'राष्ट्रीय एकता' को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि तिब्बतियों को इन नीतियों के पीछे छिपे सांस्कृतिक विलयीकरण के असली इरादे को पहचानना होगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती भाषा और लिपि को सीखना और उसे संरक्षित रखना बेहद जरूरी है। साथ ही, उन्होंने परम पावन दलाई लामा के उस हालिया मार्गदर्शन को भी याद दिलाया, जिसमें परम पावन ने तिब्बती भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला था। उन्होंने सभी से इस दिशा में नए सिरे से प्रतिबद्धता जताने और प्रयास करने का आग्रह किया।

इस प्रतियोगिता का समन्वय न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी तिब्बती समुदाय संघ के अध्यक्ष कालसांग शेरिंग ने किया। इसमें उत्तरी अमेरिका के दस अलग-अलग स्थानों से ३०० से ज्यादा छात्र, शिक्षक और अभिभावक शामिल हुए। प्रतिभागियों ने छह अलग-अलग श्रेणियों के अंतर्गत प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लिया-: क्विज (जिसमें भाषा, इतिहास, परम पावन दलाई लामा की जीवनी, व्याकरण और सामान्य ज्ञान से जुड़े प्रश्न पूछे गए), वाद-विवाद (जिसका विषय था बुद्धिमत्ता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है परिश्रम- इस विषय पर प्रतिभागियों ने पक्ष और विपक्ष दोनों में अपने विचार रखे), घोटोन उत्सव की थीम पर आधारित भाषण प्रतियोगिता, समूह गान और समूह नृत्य।

शुरू से आखिर तक कार्यक्रम बेहद जीवंत और दिलचस्प रहा। इसकी शुरुआत शनिवार सुबह ०९:०० बजे हुई और यह रविवार सुबह ०२:०० बजे तक चला। ऑनलाइन और आफलाइन दर्शकों की भागीदारी भी लगातार बढ़ती रही, जो इस बात का संकेत था कि लोगों में इस कार्यक्रम को लेकर जबरदस्त उत्साह और रुचि है। निर्णायकों ने भी इस कार्यक्रम को लेकर एकमत होकर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। इनमें से कुछ ने तो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सार्वजनिक रूप से अपने विचार और अनुभव भी साझा किए।

दिन में आयोजित प्रतियोगिताओं के निर्णायक पैनल में तिब्बती कला और साहित्य पहल (ताली) के कार्यकारी निदेशक न्गावांग तेनजिन नोरबू, लेखक और इतिहासकार चामदो शेराब और पूर्व सांसद मोगरू तेनपा शामिल थे। शाम की प्रतियोगिताओं के निर्णायकों में कलाकार तेनजिन नोरबू, शिक्षा विभाग के पूर्व सचिव जोंगकार तोबग्याल शेरिंग और टीसीवी स्कूल सुजा के पूर्व निदेशक पेमा सुल्ट्रिम शामिल थे।

इस प्रतियोगिता में कुल दस स्कूलों ने हिस्सा लिया। इनमें लोसाल क्येतसाल स्कूल (न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी), लुगयी फुंट्सोक गातसाल (मिनेसोटा), कैपिटल एरिया तिब्बती स्कूल, जामत्से साबोन स्कूल (इथाका), गंगजोंग तिब्बती भाषा और संस्कृति स्कूल (कनाडाई तिब्बती संघ, ओंटारियो), रिगने क्येतसाल लिंग (बोस्टन), नामचोए क्येलत्साल (उत्तरी कैलिफोर्निया), नादेन रिगपाई दुमरा (पोर्टलैंड), शिकागो वीकेंड स्कूल और फिलाडेल्फिया संडे स्कूल शामिल हैं।

गेशे थुब्तेन जिन्पा ने पूरी प्रतियोगिता देखने के बाद कहा, 'छात्रों ने भाषण प्रतियोगिता में असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में उन्होंने अपनी मातृभाषा तिब्बती में पक्ष और विपक्ष में तर्क दिए। मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला और मेरा मनोबल बढ़ा। यह सचमुच परम पावन दलाई लामा को समर्पित एक साधना की भेंट है। मैं इस अवसर पर शिक्षकों और अभिभावकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहूंगा।'

उन्होंने आगे कहा, 'चूंकि चीनी सरकार तिब्बत के भीतर तिब्बती भाषा को खत्म करने के उद्देश्य से नीतियां लागू करना जारी रखे हुए है, इसलिए स्वतंत्र देशों में निर्वासन में रहने वाले तिब्बतियों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि अपनी भाषा और पहचान को संरक्षित रखना हमारी निरंतर जिम्मेदारी है। हालांकि, भाषा की सुरक्षा के लिए सभी पक्षों से अथक प्रयास और अटूट समर्पण की आवश्यकता होती है।'

गेशे थुब्तेन जिन्पा ने शिक्षकों से भी आग्रह करते हुए कहा, 'तिब्बती भाषा और लिपि अत्यंत समृद्ध है और शिक्षकों को छात्रों को तिब्बती भाषा में पढ़ना और लिखना सिखाने पर उचित ध्यान देना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा, 'बड़े समुदायों में रहने वाले तिब्बतियों को आपस में सौहार्द बनाए रखना चाहिए। विशेष रूप से, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि युवा पीढ़ी क्षेत्रीय विभाजनों का शिकार न बने और एक तिब्बती लोगों के रूप में एकता की मजबूत भावना बनी रहे। यही मेरी आशा है।'

छह श्रेणियों में आयोजित इस प्रतियोगिता के अंत में सात स्कूलों के बीच १८ पुरस्कार वितरित किए गए, जिनमें प्रत्येक श्रेणी से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के पुरस्कार शामिल थे। जब सभी छह श्रेणियों के अंकों के प्रतिशत को जोड़ा गया, तो इस वर्ष की सांस्कृतिक प्रतियोगिता का शीर्ष पुरस्कार प्रदान किया गया। उत्तरी कैलिफोर्निया के नामचो क्येलत्सल स्कूल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, उसके बाद बोस्टन के रिगने क्येतसल लिंग ने द्वितीय स्थान और शिकागो सप्ताहांत स्कूल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अपने समापन भाषण में संपर्क अधिकारी कुंगा ताशी ने इस बात पर जोर दिया कि हालांकि रैंकिंग किसी भी प्रतियोगिता का एक हिस्सा होती है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पहलू छात्रों द्वारा दिखाया गया आत्मविश्वास और उत्साहपूर्ण भागीदारी था। उन्होंने लोसाल क्येतसाल स्कूल और उसके अभिभावक संघ के प्रति भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों सहित ३०० से अधिक प्रतिभागियों के लिए एक स्वागत समारोह का आयोजन किया।

आयोजकों ने उन सभी लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया। इनमें तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि (उनके मार्गदर्शन के लिए), तिब्बत फंड, 'ओम वोक तिब्बती रेस्टोरेंट' के मालिक फुंराब तेनजिन कालसांग और डेकी शुक्ला (वित्तीय सहायता के लिए) शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी तिब्बती समुदाय संघ के शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों, स्वयंसेवकों और कर्मचारियों का भी आभार माना।

यह प्रतियोगिता अत्यंत सफल रही और इसका समापन बड़े ही शानदार ढंग से हुआ। उत्तरी अमेरिका में तिब्बती समुदाय के बीच तिब्बती भाषा, संस्कृति और एकता को बढ़ावा देने में मिली सफलता के लिए इस प्रतियोगिता की व्यापक रूप से प्रशंसा और सराहना की गई।

- तिब्बत कार्यालय, वाशिंगटन डीसी द्वारा जारी

## ◆ ०९. परम पावन दलाई लामा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 'करुणा वर्ष' के तहत सरकारी प्राथमिक विद्यालय, जोगिवारा में स्टेशनरी और स्पोर्ट्स किट वितरित

०८ अप्रैल, २०२६

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की 'करुणा वर्ष' पहल के हिस्से के रूप में परम पावन दलाई लामा चैरिटेबल ट्रस्ट ने सरकारी प्राथमिक विद्यालय, जोगिवारा को अपना सहयोग दिया। इस पहल के तहत ट्रस्ट ने विभिन्न शैक्षिक और आवश्यक वस्तुएं वितरित कीं। इनमें स्टेशनरी, नोटबुक, स्कूल बैग, पानी की बोतलें, छाते और लंच बॉक्स वितरित किए गए। इसके अतिरिक्त, शारीरिक गतिविधि और समग्र विकास को प्रोत्साहित करने के लिए क्रिकेट किट, बैडमिंटन सेट, जंपिंग रोप और हुला हूप जैसी खेल सामग्री भी प्रदान की गई।

यह सहयोग स्कूल के १८ छात्रों को दिया गया, जिनमें स्थानीय बच्चों के साथ-साथ अन्य राज्यों से आए दिहाड़ी मजदूरों के बच्चे भी शामिल हैं। हालांकि वितरण के समय कई छात्र छुट्टियों पर थे, फिर भी सामग्री सुरक्षित रूप से सौंप दी गई है और स्कूल लौटने पर सभी लाभार्थियों को वितरित कर दी जाएगी।

यह पहल 'करुणा वर्ष' के तहत समुदाय में छात्रों की शिक्षा का समर्थन करने के लिए ट्रस्ट के निरंतर प्रयासों को दर्शाती है।

-वित्त विभाग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

## ◆ १०. लद्दाख सोनमलिंग तिब्बती बस्ती में कृषि दिवस मनाया गया

१० अप्रैल, २०२६

लद्दाख। लद्दाख सोनमलिंग तिब्बती बस्ती के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी के कार्यालय ने ०९ अप्रैल को 'कृषि दिवस' मनाया, जिसमें लद्दाख के पुलिस महानिदेशक आईपीएस श्री मुकेश सिंह मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के गृह विभाग की ओर से बस्ती के पूर्व और नव-नियुक्त- दोनों तरह के कैंप नेताओं को स्मृति-चिह्न भेंट किए। बस्ती के चार तिब्बती किसानों को भी उनके योगदान का सम्मान करने के लिए कृषि उपकरण देकर सम्मानित किया गया। बस्ती के एक किसान- ताशी ल्हादर ने दर्शकों के लिए कृषि से संबंधित एक कविता सुनाई।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था की सराहना की और कहा कि निर्वाचित कैंप नेताओं पर अपने समुदाय की देखभाल करने और उनकी चिंताओं को दूर करने की जिम्मेदारी होती है। उन्होंने यह भी बताया कि जम्मू की अपनी एक यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात परम पावन दलाई लामा से हुई थी। लद्दाख के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी ने सलाहकार बोर्ड के साथ मिलकर, १० अप्रैल को आयोजित होने वाली एक कृषि कार्यशाला की घोषणा की। कार्यक्रम का समापन 'ल्हाकर' नृत्य मंडली द्वारा एक नृत्य प्रस्तुति के साथ हुआ।

- मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय, लद्दाख की रिपोर्ट

## ◆ ११. भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने नई दिल्ली में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की १३५वीं जयंती समारोह में भाग लिया

२० अप्रैल, २०२६

किदवई नगर, नई दिल्ली। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने १८ अप्रैल २०२६ को नई दिल्ली के किदवई नगर में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की १३५वीं जयंती समारोह में भाग लिया। इस समारोह का विषय था 'शिक्षा और न्याय ही भविष्य हैं'। इस कार्यक्रम का आयोजन 'रमाई महिला जागृति मंच' द्वारा किया गया था। इसका समन्वय श्रीमती हर्षा पाटिल (भारत-तिब्बत मैत्री संघ, नागपुर) ने श्रीमती सुजाता नंदस्वर (दिल्ली) के सहयोग से किया। कार्यक्रम की मेजबानी श्रीमती स्वप्ना भोटवाटे, करुणा मेश्राम, श्वेता संताके और श्रीमती वनमाला पंतवाने ने की। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई, जिसके बाद श्रीमती सुजाता नंदस्वर ने परिचयात्मक भाषण दिया। कार्यक्रम के वक्ताओं में भारत सरकार के वित्त मंत्रालय में निदेशक श्रीमती क्रांति खोबरागड़े, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अतिरिक्त महानिदेशक श्री टी.जे. अलोन, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर श्री सुरेंद्र सिंह, भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय की समन्वयक ताशी देकि और माननीय भंते शामिल थे।

श्रीमती क्रांति खोबरागड़े ने सभा को संबोधित करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने समाज को अन्याय के खिलाफ उठ खड़े होने और गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं के विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम से सशक्तीकरण में उनके अटूट समर्पण पर जोर दिया और सामाजिक प्रगति तथा समता के प्रति उनके दृष्टिकोण को रेखांकित किया। उन्होंने श्रोताओं से आंबेडकर के साहित्य को पढ़ने और उससे जुड़ने का आग्रह किया।

श्री सुरेंद्र सिंह ने भारत के संवैधानिक लोकतंत्र के निर्माण, सामाजिक समता की वकालत, महिलाओं और वंचित समुदायों के सशक्तीकरण तथा दूरदर्शी आर्थिक और रणनीतिक दृष्टिकोण प्रदान करने में डॉ. बी.आर. आंबेडकर के योगदान पर प्रकाश डाला।

श्री टी.जे. अलोन ने आंबेडकर के असाधारण जीवन सफर पर एक सारगर्भित भाषण दिया। उनका जीवन निरंतर संघर्ष और अकादमिक उत्कृष्टता से भरा रहा, जिसके दौरान उन्होंने तीस से अधिक डिग्रियां हासिल कीं। उन्होंने आंबेडकर के संवैधानिक दृष्टिकोण और बौद्ध धर्म को समता और करुणा के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करने में उनके आध्यात्मिक नेतृत्व पर जोर दिया। साथ ही, उन्होंने हाशिए पर पड़े समुदायों को बौद्ध धर्म अपनाने के जरिए गरिमा और सशक्तीकरण की ओर ले जाकर उनके उत्थान में दिए गए आंबेडकर के परिवर्तनकारी योगदान को भी रेखांकित किया।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय की समन्वयक ताशी देकि ने इस कार्यालय की भूमिका और उद्देश्यों से उपस्थित लोगों का परिचय कराया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत रत्न डॉ. आंबेडकर हमेशा से तिब्बती लोगों के लिए शक्ति का स्रोत और एक सम्मानित आदर्श रहे हैं। उन्होंने १९४९ में तिब्बत के पक्ष में आंबेडकर के ऐतिहासिक रुख को याद किया, जब उन्होंने पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बजाय तिब्बत को मान्यता देने की वकालत की थी। उन्होंने आंबेडकर की दूरदर्शिता को उजागर किया, जिन्होंने यह चेतावनी दी थी कि चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा भारत की सुरक्षा के लिए एक दीर्घकालिक खतरा पैदा करेगा। साथ ही, उन्होंने भारत के लिए एक रणनीतिक बफर (सुरक्षा कवच) के रूप में तिब्बत की भूमिका पर भी जोर दिया। उन्होंने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक शांति के लिए तिब्बत के महत्व को और अधिक रेखांकित किया। इसके साथ ही उन्होंने तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता की पुष्टि की और भारत के लोगों से निरंतर समर्थन बनाए रखने की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि सत्य पर आधारित तिब्बती आंदोलन को केवल भारतीय भाई-बहनों के साथ एकता के माध्यम से ही मजबूत बनाया जा सकता है।

इस कार्यक्रम में १०० से अधिक लोगों ने भाग लिया। इसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, आईटीसीओ द्वारा तिब्बत से संबंधित साहित्य का वितरण, एक चित्रकला प्रतियोगिता और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विरासत पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी (क्विज) शामिल थी।

-आईटीसीओ द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

## ◆ १२. महिला सशक्तीकरण डेस्क ने तिब्बती बस्तियों में एसजीबीवी और लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्यशालाएं आयोजित कीं

१३ अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के वित्त विभाग के महिला सशक्तीकरण डेस्क ने २५ मार्च से ०९ अप्रैल, २०२६ तक कार्यशालाओं की एक शृंखला आयोजित की। इनमें टीडीएल बाइलाकुप्पी, कोल्लेगल और मुंडगोड बस्ती समिति के सदस्यों के लिए एसजीबीवी समिति कार्यशालाएं, एसटीएस कोल्लेगल और एसटीएस मुंडगोड के लिए स्कूल आईसीसी कार्यशालाएं और कोल्लेगल तथा मुंडगोड बस्ती के निवासियों के लिए लैंगिक संवेदनशीलता कार्यशालाएं शामिल थीं।

एसजीबीवी समिति कार्यशालाओं को समिति के सदस्यों की क्षमता को मजबूत करने के लिए डिजाइन किया गया था, ताकि वे समुदाय के भीतर यौन और लिंग-आधारित हिंसा (एसजीबीवी) से संबंधित मामलों पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकें। स्कूल आईसीसी कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) के सदस्यों की उस क्षमता को बढ़ाना था, जिससे वे स्कूली परिवेश में यौन उत्पीड़न की घटनाओं को रोक सकें, उन पर प्रतिबंध लगा सकें और उनका समाधान कर सकें।

इसके अतिरिक्त, लैंगिक संवेदनशीलता कार्यशालाओं का उद्देश्य लिंग, सेक्स, लैंगिक रूढ़िवादिता और सामाजिक मानदंडों जैसी प्रमुख अवधारणाओं के बारे में जागरुकता बढ़ाना था। इन सत्रों का लक्ष्य समुदाय के सदस्यों के बीच इस बात की गहरी समझ को बढ़ावा देना था कि सभी के लिए एक समावेशी, न्यायसंगत और सुरक्षित वातावरण बनाने में सामूहिक प्रयासों का क्या महत्व है।

- सीटीए के महिला सशक्तिकरण डेस्क की रिपोर्ट

## ◆ १३. टिपा ने अरुणाचल के मेनचुखा से १२ छात्रों को ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पहल के तहत दाखिला दिया

१३ अप्रैल, २०२६

धर्मशाला। तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टिपा) ने शनिवार को अरुणाचल प्रदेश के मेनचुखा से १२ छात्रों को औपचारिक रूप से संस्थान में दाखिला दिया। यह एक विशेष पहल है, जिसका उद्देश्य हिमालयी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना और बढ़ावा देना है।

दाखिला समारोह सुबह १०:०० बजे संस्थान के मुख्य हॉल में आयोजित किया गया। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्ति, संकाय सदस्य, छात्र और मेनचुखा से आया एक प्रतिनिधिमंडल उपस्थित था, जिसमें नए प्रवेश पाने वाले छात्रों के परिवार के सदस्य भी शामिल थे।

इस पहल की शुरुआत फरवरी २०२५ में हुई एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान यात्रा से हुई थी। उस समय टिपा का एक प्रतिनिधिमंडल मेनचुखा में लोसार समारोह में शामिल हुआ था और स्थानीय सांस्कृतिक संघ के निमंत्रण पर पारंपरिक तिब्बती प्रस्तुतियां दी थीं। इस यात्रा ने 'मेम्बा' समुदाय और तिब्बती परंपराओं के बीच गहरे भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को उजागर किया। साथ ही, इसने पीढ़ीगत बदलाव के बीच इन परंपराओं के धीरे-धीरे लुप्त होने की चिंताओं की ओर भी ध्यान आकर्षित किया।

टिपा ने स्थानीय नेताओं और समुदाय के प्रतिनिधियों की अपील के बाद अपनी ५०वीं कार्यकारी बैठक के दौरान विस्तृत विचार-विमर्श के बाद १२ छात्रों के दाखिले को मंजूरी दे दी। इनमें छह लड़के और छह लड़कियां चुनी गईं। इसके साथ ही इन छात्रों को सशर्त निःशुल्क शिक्षा की पेशकश की गई कि वे संस्थान में प्रशिक्षण के लिए कम से कम छह साल तक रहें।

इस समारोह में धर्म और संस्कृति विभाग के सचिव धोंडुल दोरजी मुख्य अतिथि के रूप में सुशोभित हुए। मेनचुखा सांस्कृतिक संघ के प्रतिनिधि भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इनमें महासचिव सांगे सोना और उपाध्यक्ष चीडेन गोइबा शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक अनुष्ठानिक भेंटों के साथ हुई, जिसमें 'खटक (औपचारिक स्कार्फ)' भेंट करना और परम पावन दलाई लामा के चित्र के समक्ष मक्खन के दीपक जलाना शामिल था। इसके बाद औपचारिक भाषण हुए।

अपने स्वागत भाषण में टिपा के निदेशक ने इस पहल के महत्व पर जोर दिया और छात्रों तथा उनके परिवारों से आग्रह किया कि वे प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूरी अवधि तक अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखें। उन्होंने छात्रों की सफलता के लिए अनुशासन और संस्थान के दिशा-निर्देशों का पालन करने को भी अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

मेनचुखा के प्रतिनिधियों ने इस कार्यक्रम में शिरकत करने की अनुमति प्रदान करने के लिए टिपा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और संक्षेप में उस प्रक्रिया की रूपरेखा प्रस्तुत की, जिसके परिणामस्वरूप यह सहयोग संभव हो पाया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि सचिव धोंडुल दोरजी ने तिब्बती धर्म, संस्कृति और भाषा की सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया और ऐसे संरक्षण प्रयासों में सहायता करने में धर्म और संस्कृति विभाग की भूमिका को रेखांकित किया। कार्यक्रम का समापन कलात्मक निदेशक तेनजिन फुंट्सोक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसके बाद अतिथियों और शिक्षण कर्मचारियों को औपचारिक स्कार्फ और स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

अधिकारियों ने मेम्बा छात्रों के नामांकन को एक ऐतिहासिक घटना बताया, जो संस्थान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पहल से न केवल सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, बल्कि तिब्बत और अरुणाचल प्रदेश के समुदायों के बीच संबंधों को भी मजबूती मिलेगी।

अरुणाचल प्रदेश सरकार में शिक्षा, संसदीय कार्य, ग्रामीण कार्य, पर्यटन और सार्वजनिक पुस्तकालयों के माननीय मंत्री श्री पासांग दोरजी सोना की ओर से प्राप्त एक प्रशंसा-पत्र में भी इस प्रयास की सराहना की गई। उन्होंने इसे आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक सार्थक कदम बताया।

- तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान की रिपोर्ट

## ◆ १४. यूएन विशेषज्ञों ने चीन के नस्लीय एकीकरण और प्रोग्रेस कानून पर चिंता जताई

२१ अप्रैल, २०२६

जिनेवा। संयुक्त राष्ट्र के विशेष रिपोर्टियर्स के एक समूह ने १६ अप्रैल, २०२६ को जिनेवा में चीन द्वारा हाल ही में अपनाए गए 'नस्लीय एकीकरण कानून और प्रोग्रेस कानून पर गंभीर चिंता जताई। यह कानून ०१ जुलाई, २०२६ से लागू होने वाला है। हालांकि इस कानून का घोषित उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सामंजस्य को मजबूत करना है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यह मौलिक मानवाधिकारों, खासकर नस्लीय अल्पसंख्यकों के अधिकारों को कमजोर कर सकता है।

यह कानून चीन में व्यापक नीतिगत बदलाव को दर्शाता है, जिसमें नस्लीय विविधता के बजाय एकीकृत राष्ट्रीय पहचान को प्राथमिकता दी जा रही है। सांस्कृतिक और भाषाई अधिकारों के लिए मौजूदा संवैधानिक सुरक्षा के बावजूद यह तिब्बती, उग्यूर और मंगोल जैसे अल्पसंख्यक समूहों पर काफी दुष्प्रभाव डाल सकता है।

इस कानून की अस्पष्ट भाषा एक और प्रमुख चिंता का विषय है, जिसमें उन कार्यों पर रोक शामिल है जो 'नस्लीय एकता को कमजोर करते हैं।' यूएन ने चेतावनी दी है कि ऐसी अस्पष्टता अधिकारियों को व्यापक या मनमानी व्याख्या करने की छूट दे देती है, जिसका बेजा फायदा उठाकर वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अकादमिक कार्यों और सांस्कृतिक प्रथाओं को दबाने का काम कर सकते हैं।

शिक्षा से जुड़े प्रावधान भी विवादास्पद हैं। यह कानून मंदारिन को शिक्षा की प्राथमिक भाषा के रूप में स्थापित करता है, जिससे स्कूलों में अल्पसंख्यक भाषाओं की भूमिका सीमित हो सकती है। विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि इससे विशेष रूप से युवा पीढ़ियों के बीच भाषाई विविधता खत्म हो सकती है और सांस्कृतिक पहचान कमजोर पड़ सकती है।

यह कानून सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में भी चिंताएं पैदा करता है। धर्म के चीनीकरण और सांस्कृतिक प्रथाओं में बदलाव को उकसावा देने वाली नीतियां आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर शासन का नियंत्रण स्थापित कर सकती हैं, जिससे धर्म और विश्वास की स्वतंत्रता का उल्लंघन होने की आशंका है। इसके अलावा, समुदायों के एकीकरण के उपायों का

असर आवास के चुनाव और सामाजिक संगठन पर पड़ सकता है।

अन्य खतरों में सभा करने और संगठन बनाने की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध शामिल हैं। सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के व्यापक संदर्भों का उपयोग शांतिपूर्ण सभाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामुदायिक वकालत को सीमित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे अल्पसंख्यक आबादी के बीच एक डर का माहौल बन सकता है।

अंतरराष्ट्रीय कानूनी दृष्टिकोण से यूएन विशेषज्ञों का तर्क है कि यह कानून चीन के उन संधियों के तहत दायित्वों के साथ टकराव पैदा कर सकता है, जैसे कि 'आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा' और 'बाल अधिकारों पर कन्वेंशन', जो सांस्कृतिक भागीदारी, शिक्षा के अधिकार और भेदभाव-रहित व्यवहार की रक्षा करते हैं।

यूएन ने चीनी सरकार से इस बात पर स्पष्टीकरण की मांग की है कि यह कानून अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा कैसे करेगा और क्या प्रभावित समुदायों से इस बारे में परामर्श किया गया था। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी सहायता की पेशकश भी की है। इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो की प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने संयुक्त राष्ट्र के इस संदेश का स्वागत किया। उन्होंने इस कानून को जबरन आत्मसातीकरण की दिशा में एक चिंताजनक कदम बताया और चेतावनी दी कि यह सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधता को दबा सकता है। उन्होंने चीन से आग्रह किया कि वह इस कानून के कार्यान्वयन को रोक दे और मानवाधिकार मानकों के अनुरूप इसमें संशोधन करे।

इस संदेश पर अल्पसंख्यक मुद्दे के कार्यकर्ता प्रो. निकोलस लेव्रत, सांस्कृतिक अधिकार कार्यकर्ता एलेक्जेंड्रा जैंथाकी, विकास अधिकार कार्यकर्ता सूर्य देवा, शिक्षा अधिकार कार्यकर्ता फरीदा शहीद, राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कार्यकर्ता आइरीन खान, शांतिपूर्ण सभा और संगठन की स्वतंत्रता पर काम करने वाली कार्यकर्ता जीना रोमेरो, आवास और भेदभाव विरोधी कार्यकर्ता बालकृष्णन राजगोपाल और धर्म-आस्था की स्वतंत्रता पर काम करने वाली कार्यकर्ता नाजिला घानिया ने संयुक्त रूप से हस्ताक्षर किए।

- तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

## ◆ १५. चीन ने परम पवित्र धारग्ये का जबरन गायब कर सजा दी

०९ अप्रैल, २०२६

इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत, ०८ अप्रैल २०२६

इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) ने ६३ वर्षीय तिब्बती भिक्षु परम पवित्र धारग्ये के जबरन गायब किए जाने और उन्हें गुपचुप तरीके से सजा सुनाए जाने के मामले को उजागर किया है। यह मामला तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (तार) और पड़ोसी तिब्बती जिलों में चीन द्वारा धार्मिक दमन और न्यायिक गोपनीयता के बढ़ते अभियान का एक कड़ा उदाहरण है। आईसीटी को विश्वसनीय सूत्रों से मिली रिपोर्टों के अनुसार, चार साल से भी ज्यादा समय तक बिना किसी से संपर्क कराए हिरासत में रखे जाने के बाद धारग्ये को सात साल की जेल की सजा सुनाई गई है। उनका मामला चीनी अधिकारियों द्वारा शांतिपूर्ण बौद्ध धार्मिक रीति-रिवाजों को सुनियोजित तरीके से अपराध घोषित करने और मौलिक कानूनी प्रक्रिया के अधिकारों का नियमित रूप से उल्लंघन करने की प्रवृत्ति को उजागर करता है

जबरन गिरफ्तारी और गायब किया जाना

धारग्ये की मुश्किलें ०५ अगस्त, २०२१ को शुरू हुईं, जब उन्हें ल्हासा में चीनी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उन्हें सेरिंग नाम के एक रिश्तेदार और चोएक्यी नाम की एक भिक्षुणी के साथ हिरासत में रखा गया था। यहां से सेरिंग और चोएक्यी को कई महीनों बाद रिहा कर दिया गया। वहीं धारग्ये को हिरासत में ही रखा गया और उसके बाद उन्हें जबरन गायब कर दिया गया। उनके बारे में जानकारी के कुछ सुराग २०२५ की पतझड़ में सामने आने शुरू हुए।

धारग्ये के परिवार को उनके ठिकाने के बारे में चार साल से भी ज्यादा समय तक अंधेरे में रखा गया। जब २०२१ में उन्हें गिरफ्तार किया गया, परिवार के सदस्यों ने ल्हासा में चीनी अधिकारियों से नियमित रूप से संपर्क करना शुरू कर दिया, लेकिन उन्हें झूठा आश्वासन दिया गया कि धारग्ये ठीक हैं और उन्हें जल्द ही रिहा कर दिया जाएगा। इन झूठे वादों ने उनके परिवार को उम्मीद बंधाई और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने उनकी हिरासत का मुद्दा उठाने से रोक दिया।

आरोप और सजाधारग्ये को सजा सुनाए जाने की जानकारी जनवरी २०२६ के अंत में सामने आई। आईसीटी का मानना है कि उन पर दलाई लामा को पारंपरिक तिब्बती बौद्ध मौद्रिक भेंट (क्याब-टेन སྐྱབས་རྟེན་ और न्गो-टेन བསྔོ་རྟེན་) देने का आरोप लगाया गया था। अधिकारियों ने कथित तौर पर उन पर तिब्बत से भागने की कोशिश कर रहे तिब्बती भिक्षुओं की मदद करने का भी आरोप लगाया।

कानूनी कार्यवाही पूरी तरह से गोपनीय रखी गई थी। धारग्ये के परिवार को उनके ऊपर लगे आरोपों, उनके मुकदमे की तारीख, फैसला सुनाने वाली अदालत या उन्हें कहां हिरासत में रखा गया है, इस बारे में कोई भी सूचना नहीं दी गई। उन्हें किसी से भी मिलने की इजाजत नहीं दी गई और उनकी मौजूदा सेहत के बारे में भी कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। उनकी ज्यादा उम्र को देखते हुए उनके रिश्तेदारों में इसे लेकर गहरी चिंता है।

पूज्य धारग्ये की गिरफ्तारी के लगभग एक साल बाद अगस्त २०२२ में चीनी अधिकारियों ने एक अलग मामले में उनके भाई सेडू को चार अन्य तिब्बतियों के साथ हिरासत में ले लिया। इन पांचों लोगों को पारंपरिक धार्मिक गतिविधियां आयोजित करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, जिनमें पहाड़ों के देवताओं को धूप चढ़ाना और प्रार्थना सभाएं करना शामिल था। इन पांचों तिब्बतियों में से एक की बुरी तरह पिटाई के कारण मौत हो गई, जबकि बाकी चार को दो साल की जेल की सजा सुनाई गई।

कानूनी मानकों का उल्लंघन

आईसीटी के विश्लेषण से यह साफ पता चलता है कि धरग्ये के मामले को संभालने में चीनी अधिकारियों ने चीन के आपराधिक प्रक्रिया कानून (सीपीएल) और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का स्पष्ट रूप से उल्लंघन किया है। अनुच्छेद- ८५ के तहत अधिकारियों के लिए यह जरूरी है कि वे किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी के कारणों और उसे हिरासत में रखने के जगह की जानकारी २४ घंटे के भीतर उसके परिवार को दें। संयुक्त राष्ट्र के 'किसी भी प्रकार की हिरासत या कारावास के तहत सभी व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए सिद्धांतों के निकाय' (जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव ४३/१७३

द्वारा ०९ दिसंबर १९८८ को स्वीकार किया गया था) का सिद्धांत- १६, नेल्सन मंडेला नियमों का नियम- ५८, और 'जबरन गुमशुदगी से सभी व्यक्तियों की सुरक्षा' से संबंधित अनुच्छेद- १७ और १८ में यह अनिवार्य किया गया है कि संबंधित देश गुमशुदा व्यक्ति के बारे में बुनियादी जानकारी, जैसे कि उसका क्या हुआ और वह कहां है- बिना किसी देरी के उसके परिवार को उपलब्ध कराएं। इसमें केवल कुछ बहुत ही सीमित और समय-निर्धारित अपवाद किए गए हैं। धारग्ये को पांच वर्षों तक बाहरी दुनिया से पूरी तरह से काट कर रखने का कृत्य, जो कि किसी भी स्वीकार्य सीमा से कहीं अधिक है, चीन द्वारा अपने ही कानूनी ढांचे और अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है।

इसके अलावा, पारंपरिक बौद्ध द्रव्य चढ़ावों को अपराध घोषित करना तिब्बती बौद्ध आस्था के मूल पर ही सीधा प्रहार है। तिब्बती बौद्ध परंपरा में चढ़ावे या भेंट देना धार्मिक गुरुओं के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का एक अनिवार्य माध्यम माना जाता है। 'क्याब-टेन एक ऐसा ही चढ़ावा है, जो किसी धार्मिक गुरु की शरण लेने के भाव के साथ समर्पित किया जाता है। वहीं न्गो-टेन एक विशेष प्रकार का समर्पित चढ़ावा है, जो आमतौर पर दिवंगत व्यक्तियों या गंभीर रूप से बीमार लोगों के नाम पर चढ़ाया जाता है, ताकि उनके लिए 'सकारात्मक कर्मों' का संचय हो सके। हालांकि, चीन की 'स्थिरता बनाए रखने' की नीति के तहत, निर्वासित आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति इस प्रकार की श्रद्धा व्यक्त करने को 'अलगाववाद भड़काने' या 'राजसत्ता को उखाड़ फेंकने' के कृत्य के बराबर माना जाता है।

पूज्य धारग्ये को दी गई सजा की प्रक्रिया में बरती गई अपारदर्शिता, तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता के हनन के मामले में चीनी अधिकारियों द्वारा किए जा रहे घोर उल्लंघनों का एक जीता-जागता उदाहरण है। व्यापक निगरानी और 'जबरन गुमशुदगी' के हथकंडे का रणनीतिक रूप से इस्तेमाल करते हुए, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी लगातार धार्मिक स्वतंत्रता का दमन कर रही है और तिब्बतियों तथा उनके निर्वासित गुरुओं के बीच के आध्यात्मिक संबंधों को तोड़ने का काम कर रही है। न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता का अभाव यह सुनिश्चित करता है कि तिब्बतियों के विरुद्ध किए जा रहे दमन के ऐसे अनेक मामले कभी भी दुनिया के सामने आ ही न पाएं।

वर्ष १९६२ में गोलोक के सेरता (वुलशुल क्षेत्र, अमदो) में जन्मे धारग्ये, चोफेल और चोएल्हा के पुत्र हैं। वे सेरता सेरा मठ के एक भिक्षु हैं। यह मठ १७३६ में स्थापित हुआ था और अपनी पुरानी तथा नई- दोनों तरह की बौद्ध परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए जाना जाता है। अपनी गिरफ्तारी से पहले, वे ल्हासा में रहते थे, जहां स्थानीय तिब्बती श्रद्धालु अक्सर पवित्र वस्तुओं, धर्मग्रंथों और स्तूपों के अभिषेक अनुष्ठान करवाने हेतु उनसे संपर्क करते थे।

## ◆ १६. चीन का नया नस्लीय कानून जबरन एकीकरण को कानूनी बनाता है, पर संविधान का उल्लंघन करता है

०३ अप्रैल, २०२६

परम पावन दलाई लामा के पूर्वी एशिया प्रतिनिधि का कहना है कि यह कानून एकीकरण को कानूनी बनाता है, वैचारिक नियंत्रण को और कड़ा करता है और अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा संयुक्त राष्ट्र के समझौतों का उल्लंघन करता है।

-सेवांग ग्याल्पो आर्य, जापान फॉरवर्ड, ०३ अप्रैल, २०२६

चीनी नेशनल पीपल्स कांग्रेस (एनपीसी) ने ११-१२ मार्च को 'नस्लीय एकता और प्रगति को बढ़ावा' नामक एक निरपेक्ष शीर्षक के तहत एक नया कानून पारित किया है।

यह कानून ०१ जुलाई, २०२६ से प्रभावी होने वाला है। एकता और प्रगति सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास की नींव हैं, जो इसे पहली नजर में एक स्वागत योग्य पहल बनाती है।

हालांकि, यहां एक प्रासंगिक प्रश्न यह है कि पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की स्थापना के सत्तर से अधिक वर्षों के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) को नस्लीय एकीकरण पर एक नया कानून लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

एकता के नाम पर एकीकरण

इसका तात्कालिक जवाब है कि मुक्ति, एकता और समृद्धि के अपने दावों के बावजूद यह शासन अभी भी तिब्बत, पूर्वी तुर्किस्तान, दक्षिणी मंगोलिया और अन्य क्षेत्रों के अल्पसंख्यक नागरिकों का विश्वास और निष्ठा जीतने में सफल नहीं हो पाया है।

यह शासन अब एकता के नाम पर जबरदस्ती एकीकरण कर रहा है और न केवल अल्पसंख्यक नागरिकों से, बल्कि चीनी लोगों तथा ताइवान, हांगकांग और मकाऊ के लोगों से भी देशभक्ति और निष्ठा प्रदर्शित करने को कह रहा है। इसके अलावा, यह निष्ठा चीन के प्रति नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति है, जिसे सर्वोच्च सत्ता माना गया है।

इस कानून में सात अध्याय और ६५ अनुच्छेद हैं। नस्लीय एकीकरण की बात कहने के बावजूद, इसमें चीनी (हान) श्रेष्ठतावाद का प्रदर्शन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसमें पूरे दस्तावेज में लगभग ८० बार 'चीनी नागरिक' और 'चीनी राष्ट्र' जैसे वाक्यांशों का बार-बार उपयोग किया गया है।

यदि यह नस्लीय कानून पूरी तरह से चीनी राष्ट्रीय समुदाय की एक मजबूत भावना विकसित करने के बारे में है, तो फिर अन्य नागरिकों और नस्लीय समुदायों के लिए इसमें क्या है? यह कानून केवल चीनी नागरिकों की एकता की बात करता है। यह इस क्षेत्र के अल्पसंख्यक नागरिकों को कुछ भी प्रदान नहीं करता है।

गढ़ी हुई राष्ट्रीय पहचान यह नया कानून पूरी तरह से चीनी राष्ट्र और चीनी राष्ट्रीय समुदाय के बारे में है और इसका अल्पसंख्यक नागरिकों से कोई लेना-देना नहीं है। इसके लिए कानून के अनुच्छेद-१ से आगे देखने की जरूरत नहीं है। इसमें कहा गया है, 'यह कानून संविधान के अनुसार, नस्लीय एकता और प्रगति को बढ़ावा देने, चीनी राष्ट्र के लिए समुदाय की एक मजबूत भावना जगाने, चीनी राष्ट्रीय समुदाय के निर्माण को आगे बढ़ाने और चीनी राष्ट्र के महान पुनरुद्धार की प्राप्ति को गति देने के उद्देश्य से बनाया गया है।'

यह अनुच्छेद अतार्किक और असंगत है। पहली बात, अपने दावों के बावजूद यह कानून पीआरसी के संविधान (अनुच्छेद-४) के अनुरूप नहीं है, जिसमें अल्पसंख्यक नागरिकों को अपनी पहचान, भाषा और संस्कृति को बनाए रखने और बढ़ावा देने की स्वतंत्रता और स्वायत्तता दी गई है। इसलिए, अपनी आत्मसातीकरण नीति को वैध ठहराने के लिए संविधान का यह घोर उल्लंघन और गलत व्याख्या है।

दूसरी बात, यह कानून चीनी राष्ट्र के लिए समुदाय की एक मजबूत भावना जगाने की बात करता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि चीन इस समय एक राष्ट्र-राज्य नहीं है। यह अतिक्रमण किए गए क्षेत्रों का एक औपनिवेशिक साम्राज्य है। अल्पसंख्यक समुदायों के लोग चीनी नहीं हैं, बल्कि उनकी अपनी अलग-अलग राष्ट्रीय पहचान है। इसलिए, चीन के एक राष्ट्र-राज्य होने का दावा और अल्पसंख्यक नागरिकों के चीनी नागरिक होने का दावा सच नहीं है। यह अल्पसंख्यक नागरिकों की पहचान और आकांक्षाओं पर सीधा हमला और उनका उपहास है।

तीसरी बात, यह 'चीनी राष्ट्रीय समुदाय' के निर्माण की बात करता है। यदि सीसीपी एक 'चीनी राष्ट्र' को बढ़ावा देना और उसका निर्माण करना चाहती है, तो उसे सबसे पहले चीन को चीनी लोगों को वापस सौंप देना चाहिए। अभी की स्थिति यह है कि पूरा चीनी राष्ट्र सीसीपी की तानाशाही के अधीन है और यह चीनी लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

यदि चीन को चीनी लोगों का नुमाइंदा बनना है, तो चीनी सरकार को लोगों की, लोगों के लिए, और लोगों द्वारा चुनी गई सरकार होना चाहिए। क्या मौजूदा शासन इसके लिए तैयार है?

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की गलत व्याख्या

कानून का अनुच्छेद- २ में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को पालन करने का प्रावधान किया गया है। फिर भी, शासन जो कर रहा है, वह उन दो महान नेताओं की शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत है। मार्क्सवाद का मूल तत्व श्रम शोषण को समाप्त करने पर आधारित है, लेकिन सीसीपी शासन मुख्य रूप से श्रम शोषण, विशेषकर उग्यूर और अन्य अतिक्रमण वाले क्षेत्रों में शोषण के लिए ही जाना जाता है।

लेनिनवाद विभिन्न राष्ट्रीयताओं की स्वतंत्रता और स्वायत्तता की बात करता है, लेकिन यह शासन इसके विपरीत, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के उन्मूलन और उन्हें मुख्यधारा में आत्मसात करने का काम कर रहा है। तो फिर, यह शासन किस अधिकार से मार्क्सवाद और लेनिनवाद की बात करता है?

'जो लोग राष्ट्रीयताओं और भाषाओं की समानता से सहमत नहीं हैं और उसका समर्थन नहीं करते, तथा जो लोग राष्ट्रीय उत्पीड़न और असमानता के विरुद्ध संघर्ष नहीं करते, वे न तो मार्क्सवादी हैं और न ही समाजवादी'। (लेनिन के संकलित कृतित्व, खंड २०)।

दूसरी ओर, जोसेफ स्टालिन ने कहा था कि 'किसी विशेष राष्ट्रीयता के लोग अपनी भाषा का प्रयोग इसलिए करते हैं, क्योंकि अपनी भाषा का उपयोग ही उनके लिए अपनी संस्कृति, राजनीति और अर्थव्यवस्था के विकास का एकमात्र माध्यम है'। (स्टालिन के संकलित कृतित्व, खंड II, ए तिब्बतन रिवोल्यूशनरी: द पॉलिटिकल लाइफ ऑफ बापा फुंतसो वांग्ये, पृष्ठ २९६)।

मार्क्सवाद और लेनिनवाद के मूल सिद्धांतों के विपरीत, यह कानून केवल एक ही उद्देश्य की बात करता है- चीनी राष्ट्रीय समुदाय, चीनी संस्कृति, चीनी नागरिक, चीनी छवि और चीनी राष्ट्र की एकता का विकास करना।

यदि शासन यह सोचता है कि इस प्रकार का कानून एकता स्थापित करने तथा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का विश्वास और निष्ठा प्राप्त करने में सहायक होगा, तो वह पूरी तरह से भ्रम में है। यह कानून तो केवल अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इस संदेह को और अधिक पुष्ट करेगा कि यह कानून उनकी पहचान और अस्तित्व को मिटाने के उद्देश्य से ही बनाया गया है।

अनुच्छेद- १५ इस विषय पर बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक भाषाओं को किस प्रकार समाप्त किया जाना चाहिए और किस प्रकार चीनी भाषा को सभी प्रयोजनों हेतु एक 'साझी और आधिकारिक भाषा' के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसने सभी शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षण और अधिगम (पढ़ने-पढ़ाने) के लिए 'साझी भाषा और लिपि' के तौर पर मंदारिन को अनिवार्य बना दिया है। इस प्रकार, इसने अल्पसंख्यक भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन को प्रभावी रूप से एक दण्डनीय अपराध बना डाला है।

कानून का अनुच्छेद- ४६ खुले तौर पर और बेझिझक होकर मांग करता है कि 'चीन में धर्मों का 'चीनीकरण' किया जाए, धर्मों को कम्युनिस्ट समाज के अनुकूल ढलने के लिए निर्देशित किया जाए, और धार्मिक कर्मियों तथा अनुयायियों को देशभक्ति की परंपराओं को बनाए रखने के लिए प्रेरित किया जाए, जिससे जातीय सद्भाव, धार्मिक सद्भाव और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा मिल सके।'

यह ध्यान देने योग्य है कि 'चीनीकरण' का अर्थ है शासन के प्रति निष्ठा और शी जिनपिंग की विचारधारा, यानी 'चीनी चरित्र वाले कम्युनिज्म' को अपनाना। यह एक खुला रहस्य है कि कम्युनिस्ट विचारधारा और 'चीनी चरित्र से परिपूर्ण कम्युनिज्म' में धार्मिक आस्थाओं के लिए कोई जगह नहीं है।

बोस्टन यूनिवर्सिटी के २०२० के 'विश्व धर्म डाटाबेस' के अनुसार, चीन और उसके द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्रों में ४९९ मिलियन (४९.९ करोड़) लोक और नस्लीय धर्मों के अनुयायी, २८.८ करोड़ बौद्ध, १०.६ करोड़ ईसाई, २.३७ करोड़ मुस्लिम, ७७ लाख ताओवादी और कन्फ्यूशियसवादी, २०,५०० सिख और २,९०० यहूदी रहते हैं।

यह आंकड़ा कुल मिलाकर लगभग ९२.४ करोड़ अनुयायियों तक पहुंचता है। यह एक बहुत बड़ी संख्या है, जो दुनिया की कुल आबादी का लगभग आठवां हिस्सा है। यदि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी इस योजना में सफल हो जाती है, तो दुनिया ऐसे नए धर्मों को देखेगी जिनके नाम तो वही होंगे, लेकिन जिनकी सर्वोच्च मार्गदर्शक शक्ति स्वयं सीसीपी होगी। यह दुनिया के विभिन्न धर्मों और सीसीपी द्वारा पोषित किए गए नए धर्मों के बीच 'धार्मिक युद्धों' के नए युग की शुरुआत करेगा

कानूनों में विरोधाभास और उल्लंघन

जैसा कि पहले बताया गया है, यह कानून चीनी संविधान और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के 'क्षेत्रीय नस्लीय स्वायत्तता कानून' के विरुद्ध है। यह नया कानून मौजूदा सभी कानूनों को निष्प्रभावी या निरस्त करने का प्रयास कर रहा है। यह एक सोची-समझी कोशिश है, जिसके तहत देश के मौजूदा अल्पसंख्यक नागरिकों को केवल 'नस्लीय अल्पसंख्यक' के रूप में सीमित कर दिया जाएगा और 'चीनी (हान)' लोगों को सर्वोच्च बहुसंख्यक वर्ग के रूप में स्थापित किया जाएगा।

यह संविधान के अनुच्छेद- ४ का तथा 'क्षेत्रीय नस्लीय स्वायत्तता कानून' के अनुच्छेद २१, ३७ और ४९ का स्पष्ट उल्लंघन है, क्योंकि ये सभी अनुच्छेद अल्पसंख्यकों की भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के संरक्षण और संवर्धन की गारंटी देते हैं। इस नए कानून को लागू करने से पहले राष्ट्रीय जन कांग्रेस को सबसे पहले संविधान और 'क्षेत्रीय स्वायत्तता कानून' में संशोधन करना अनिवार्य है।

चीन ने 'शांतिपूर्ण मुक्ति' की आड़ में तिब्बत पर आक्रमण किया था और इस कब्जे को वैध ठहराने के लिए उसने १९५१ के '१७-सूत्रीय समझौते' को एक

कानूनी दस्तावेज के तौर पर दुनिया के सामने पेश किया था। यह नया कानून उसी समझौते का उल्लंघन और घोर विश्वासघात है। संयुक्त राष्ट्र के सदस्य के तौर पर सीसीपी शासन संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार चार्टर के अनुच्छेद १५, २६, २८ और २९ का उल्लंघन कर रहा है। इसलिए यह कानून असंवैधानिक है, विश्वासघात है और संयुक्त राष्ट्र के समझौतों के खिलाफ है।

जो कुछ चीन इतने वर्षों से बल, दमन और धमकी के जरिए हासिल नहीं कर पाया है, अब वह दमन को कानूनी रूप देकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए कानून बना रहा है।

सोची-समझी दमन नीति

तिब्बती और हिमालयी बौद्धों में तिब्बती लामाओं की पुनर्जन्म प्रणाली के प्रति गहरी आस्था को देखते हुए सीसीपी ने जुलाई २००७ में 'धार्मिक आदेश संख्या ५' लागू किया। इस आदेश के तहत, पुनर्जन्म लेने वाले गुरुओं के चयन और उनकी मान्यता के लिए सरकार की मंजूरी लेना अनिवार्य कर दिया गया।

धार्मिक मामलों में अपने हस्तक्षेप को और अधिक वैध बनाने तथा धार्मिक शिक्षाओं पर अपनी पकड़ मजबूत करने के उद्देश्य से इस शासन ने जुलाई २०२४ में 'धार्मिक आदेश संख्या १९' पारित किया। इस नए नियम के अनुसार, सभी प्रकार की धार्मिक शिक्षाओं में सीसीपी की विचारधारा और 'शी जिनपिंग के विचारों' को अपनाना अनिवार्य होगा।

इन आदेशों के माध्यम से इस शासन को मठों, चर्चों, मस्जिदों, मंदिरों और धार्मिक गुरुओं पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो गया है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी ने इस शासन को इतना दुस्साहस प्रदान किया है कि उसने अब एक नया कानून 'नस्लीय एकीकरण और प्रगति' लागू कर दिया है, जिसके जरिए वह अल्पसंख्यक नागरिकों की पहचान को बिना किसी रोक-टोक के मिटा देना चाहता है।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस कानून का पुरजोर विरोध करना चाहिए, क्योंकि यह केवल चीन के अल्पसंख्यक नागरिकों से जुड़ा मुद्दा नहीं है। यह चीन का कोई 'आंतरिक मामला' भी नहीं है। इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत (आईटीसी) की रिपोर्ट के अनुसार, 'यह कानून सीसीपी को एक ऐसी 'एकीकृत राष्ट्रीय पहचान' और 'चीन की एकछत्र अवधारणा' को स्थापित करने तथा लागू करने का एक कानूनी हथियार प्रदान करता है, जिसे स्वयं सीसीपी और उसकी अधिनायकवादी विचारधारा ने गढ़ा है।'

चीन और उसके कब्जे वाले क्षेत्रों में इस अत्यंत घातक और घृणित कानून का सफल क्रियान्वयन अंततः 'ड्रैगन के विषैले धुएं' को पड़ोसी देशों और पूरे विश्व तक पहुंचा देगा और यह लोगों के मन-मस्तिष्क तथा चेतना को सीसीपी की 'चीनी चरित्र वाले कम्युनिज्म' की विचारधारा से पूरी तरह आच्छादित कर देगा। इसी प्रकार, यह कानून लोकतंत्र और विधि के शासन को भी छिपने के लिए विवश कर देगा।

- डॉ. सेवांग ग्याल्पो आर्य सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के पूर्व सचिव और तिब्बत नीति संस्थान' के पूर्व निदेशक हैं। वर्तमान में वे जापान और पूर्वी एशिया के लिए 'परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय' के प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं। उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'हार्नेसिंग द ड्रैगन्स फ्यूम' और 'द एंशिएंट तिब्बतन सिविलाइजेशन' शामिल हैं। यहां व्यक्त किए गए विचार लेखक के अपने हैं।

१७. आत्मदाह करने वाले तिब्बती की याद- थुप्तेन न्गोदुप

२७ अप्रैल २०२६

२७ अप्रैल २०१६

थुप्तेन न्गोडुप

पेशा - चरवाहा / रसोइया

विरोध प्रदर्शन की तारीख - २७ अप्रैल १९९८

विरोध प्रदर्शन का स्थान - नई दिल्ली, भारत

आयु - ६० वर्ष

स्थिति - दिवंगत (२९ अप्रैल १९९८)

तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन, डीआईआईआर, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन

२७ अप्रैल २०१६

आत्मदाह करने वाले तिब्बती की याद में

२७ अप्रैल १९९८ को नई दिल्ली में चल रही एक भूख-हड़ताल के दौरान थुप्तेन न्गोडुप आत्मदाह करने वाले पहले निर्वासित तिब्बती बने। चीनी दमन और तिब्बती विरोध-प्रदर्शनों को निष्क्रिय कराए जाने के विरोध में किया गया एक सर्वोच्च बलिदान था।

मूल रूप से मध्य तिब्बत के रहने वाले 'पावो' (वीर) थुप्तेन न्गोडुप स्वतंत्रता के प्रति अत्यंत समर्पित कार्यकर्ता थे और भारतीय सेना के साथ मिलकर काम करने वाली तिब्बती सेना के एक अनुभवी सैनिक थे।

आग की लपटों में घिरे होने के बावजूद उनकी अटूट भावना उनकी अंतिम चीखों में गूंज रही थी: 'बोद ग्याल लो!' (तिब्बत की जय हो!), 'बोद रंगजेन!' (तिब्बत आजाद हो!) और 'परम पावन दलाई लामा अमर रहें!'

लगभग पूरी तरह जल गए थुप्तेन से अस्पताल में मिलने परम पावन दलाई लामा आए। उन्होंने थुप्तेन को कोमलता से सलाह दी कि वे चीनियों के प्रति अपने मन में कोई घृणा न पालें और साथ ही इस बात की पुष्टि की कि उनके बलिदान ने तिब्बत के मुद्दे के प्रति दुनिया भर में अभूतपूर्व जागरूकता जगाई है।

गंभीर रूप से जलने के कारण दो दिन बाद २९ अप्रैल १९९८ को रात सवा बारह बजे राम मनोहर लोहिया अस्पताल में उनका निधन हो गया।

# IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

**Tashi Dekyi**
Coordinator
India Tibet Coordination Office

# आवश्यक सूचना

**प्रिय पाठकों,**

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षो से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

**ताशी देकि**
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

**कार्यलय पताः** भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
**फोनः** 011–29830578
**ई–मेलः** coordinator@indiatibet.net

कार्यक्रम वक्ता सभा को संबोधित करते हुए

११वें पंचेन लामा का ३७वां जन्मदिन समारोह